PANCHDOOT
The Voice of Youth

▪ दिसम्बर- जनवरी, 2019 ▪ मूल्य 30/- रूपए

पञ्चदूत

इश्क, विवाह और तलाक

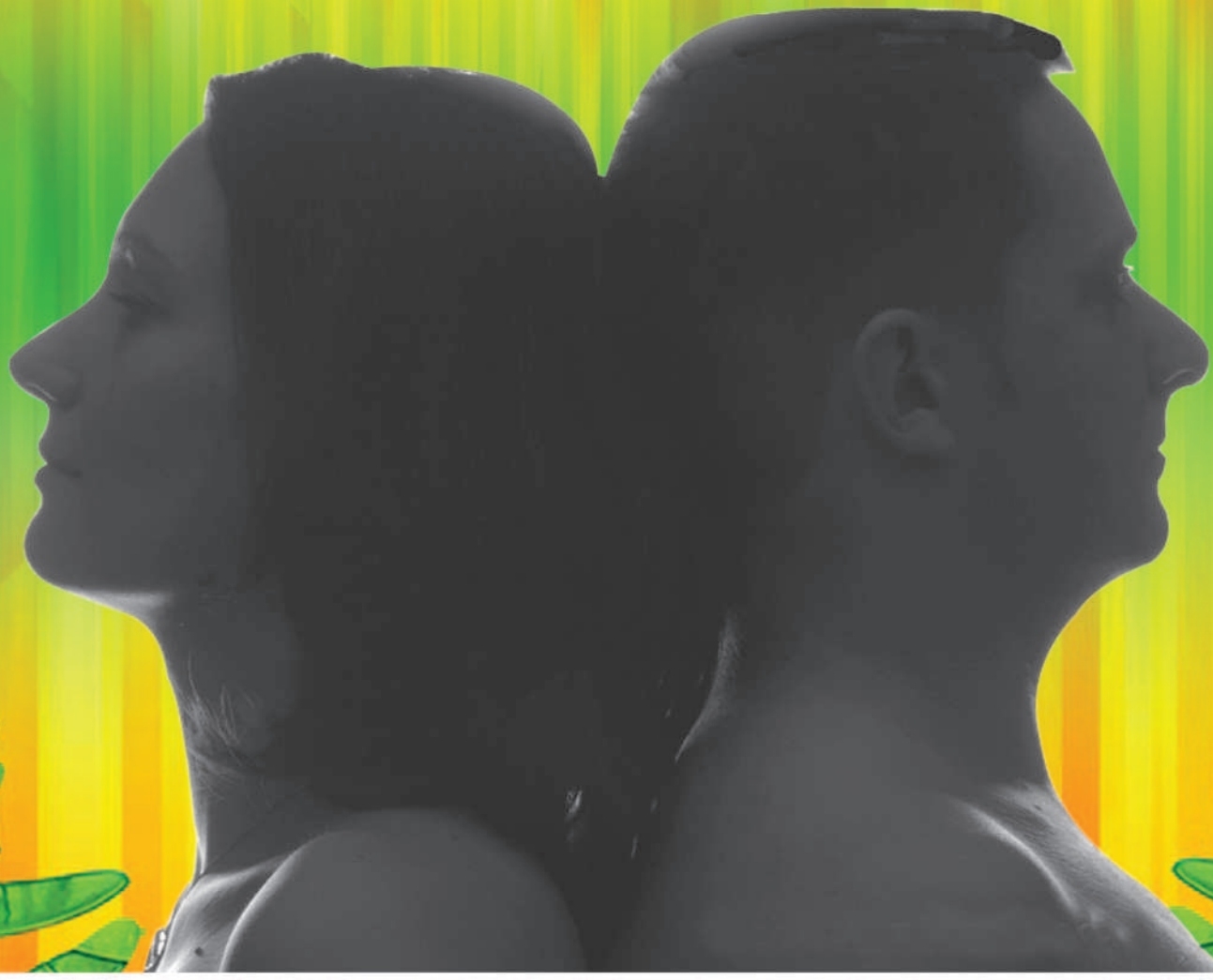

www.panchdoot.com

संस्थापक स्व. नरेन्द्र मुकुल
व्यवस्थापक त्रिभुवन नारायण सिंह
प्रधान कार्य. अधिकारी विक्रम सोलंकी
प्रधान संपादक व्याघ्रराज
वरिष्ठ संपादक निधि शर्मा
सह- संपादक संजय सोलंकी
विधि सलाहकार राजेन्द्र प्रसाद जैन, पराग जैन, रामकुमार खटोड़
क्रिएटिव हैड प्रदीप पाण्डेय
डिजाइनिंग सागर कम्प्यूटर्स
कार्यालय संवाददाता खुशहाल शर्मा
मार्केटिंग मुकुल्स पब्लिकेशन
मार्केटिंग हैड गौरव शर्मा

स्वामी, प्रकाशक एंव मुद्रक व्याघ्रराज के द्वारा पञ्चदूत मासिक पत्रिका, आजाद प्रिंटर्स, चन्द्रशेखर आजाद मार्केट, हनुमानगढ़ टाउन (राज.) 335513 से मुद्रित एवं प्रकाशित। **सम्पादक** : व्याघ्रराज

आरएनआई नं- 39685/83

पंजीकृत कार्यालय

पञ्चदूत 'मासिक', आजाद प्रिंटर्स, चन्द्रशेखर आजाद मार्केट, हनुमानगढ़ टाउन

वेब कार्यालय

माणिक्य नगर, नजदीक पुलिस थाना, माण्डलगढ़, जिला भीलवाड़ा
फोन- 01489-230125 मो.- 7976407302

संपादकीय कार्यालय

जीवन भवन 65-के ब्लॉक, श्रीगंगानगर (राज.) 335001

क्षेत्रीय कार्यालय

- 74, दूसरी मंजिल, लाजपत नगर, जगतपुरा, जयपुर
- न्यू हाउसिंग बोर्ड, पाली
- किला रोड पावटा, जोधपुर
- गुमानपुरा, कोटा
- हिरणमगरी, उदयपुर
- बजरंग फिलिंग स्टेशन, नागौर

प्रादेशिक कार्यालय

- पूजावाला मोहल्ला, बठिण्डा
- खण्डवाड़ी, तहसील पालमपुर, जिला-कांगड़ा, हिमाचल प्रदेश

सदस्यता शुल्क

मासिक : 30/- वार्षिक : 300/-

सभी जिलों में जिला स्तरीय पञ्चदूत के शाखा कार्यालय को व्यवस्थित संचालन तथा क्षेत्रीय प्रतिनिधित्व के लिए संपर्क करें।
फोन- 01489-230125 मो.- 7976407302
E-mail: magazine@panchdoot.com

सर्वर प्रबंधक

Querynext Technology

पत्रिका में प्रकाशित चित्र व लेख के कुछ आंकड़ों को इंटरनेट वेबसाइटों से संकलित किया गया है।

सम्पादकीय

नवउदय : राह नहीं आसान

पांच राज्यों का चुनावी समर थम गया है और सत्ता के सेमीफाइनल में भाजपा से कांग्रेस ने हिन्दी पट्टी के तीनों राज्य छीन लिए हैं। यह परिणाम कितने महत्वपूर्ण है इस बात पर बहस छिड़ी है। कुछ लोग इसको मोदी लहर की समाप्ति की बात कह रहे हैं तो कुछ इसको राज्यों की सरकारों के खिलाफ जनता की आवाज बता रहे हैं। इस समर में एक नारा भी बहुत सुनने में आया कि प्रधानमंत्री से बैर नहीं पर मुख्यमंत्री की खैर नहीं। मीडिया इसको चाहे जिस रूप में दिखाए परन्तु जनता ने क्या सोच कर वोट किया है, यह तो जनता ही जानती है और इसका प्रभाव आने वाले लोकसभा चुनाव पर अवश्य दिखेगा इसमें कोई शक नहीं है। चाहे यह भाजपा के खिलाफ जाए या मोदी सरकार जनता को लुभाने के लिए कुछ नया कर जाए। हालांकि कांग्रेस के लिए भी चुनौती आसान नहीं है क्योंकि चुनावी घोषणा-पत्र में किए वादों को जल्दी से निभाना जरुरी हैं क्योंकि जनता आगामी तीन - चार माह के कार्यों को देख कर लोकसभा के लिए वोट कर सकती है। नई सरकार के सामने अपने लुभावने वादों को पूरा करने के लिए एक महत्वपूर्ण चुनौती यह भी आ सकती है कि राजकीय खजाने में इन वादों के लिए आवश्यक धनराशि भी है या नहीं क्योंकि पिछली सरकारों ने भी अपने खजाने में से अंत में बहुत कुछ खर्च कर दिया है ।

इस विधानसभा के चुनाव का विश्लेषण किया जाए तो तीनों राज्यों में बहुत कुछ समानता थी तो बहुत कुछ पूरी तरह से अलग था परन्तु सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि इन तीनों राज्यों में नोटा को मिलने वाला वोट था । राजस्थान में 1.4 प्रतिशत (5,00,014), मध्यप्रदेश में 1.4 प्रतिशत (5,42,295) और छत्तीसगढ़ में 2.0 प्रतिशत (2,82,744) नोटा को मिला। तेलंगाना में भी 1.1 प्रतिशत (2,24,709) और मिजोरम में 0.5 प्रतिशत (2,917) वोट नोटा के खाते में गए। वास्तव में इसको किस तरह देखा जाए यह निर्भर करता है परन्तु सीधे-सीधे यह तो कहा ही जा सकता है कि इतने लोग वोट देने तो आए परन्तु इनको एक भी उम्मीदवार पसंद नहीं आया। यह सवाल इसलिए भी ज्यादा महत्वपूर्ण हो जाता है क्योंकि की वोट शेयर के हिसाब से अगर इसको और निर्दलियों को भी अलग - अलग पार्टी मान लिया जाए तो छठवें नंबर की पार्टी बनकर सामने आती है और बहुत से ऐसे विधानसभा क्षेत्र हैं जहाँ पर यह तीसरे और चौथे नंबर पर नोटा का स्थान आता है। राजस्थान की बात करें तो नोटा के मतदान प्रतिशत के आधार शीर्ष दस सीट की बात करें तो यह दस की दस सीट आरक्षित सीट है और यह बात सिर्फ इन दस सीट तक ही नहीं है अगर शीर्ष पन्द्रह की बात करें इन पन्द्रह में से चौदह सीट आरक्षित है। इसी तरह से नोटा के मतदान प्रतिशत के हिसाब से अंतिम दस विधानसभा को देखें तो इसमें एक भी आरक्षित नहीं हैं और अगर अंतिम बीस सीटों पर नजर डालें तो बीसवें नंबर पर आरक्षित सीट आती हैं। हालांकि यह कहना उचित नहीं होगा कि आरक्षित विधानसभा क्षेत्र में नोटा के अधिक उपयोग के पीछे कोई एक कारण प्रभावी रहा है परन्तु यह एक महत्वपूर्ण विषय अवश्य है कि इस पर गौर करना चाहिए कि ऐसा क्यों हो रहा है? क्योंकि यह सरकार और जनता के लिए जानना बहुत आवश्यक हैं कि आखिर उस मतदाता को क्या चाहिए जो अपना समय निकाल कर मतदान करने आता है और अपनी राय देकर जाता है कि उसको एक भी उम्मीदवार पसंद नहीं है। वैसे बहुत से ऐसे और मतदाता भी होंगे जिनको कोई पसंद नहीं इसलिए वो मतदान केंद्र तक ही नहीं आते हैं। नोटा के सन्दर्भ में एक बात यह भी है कि ऐसी बहुत सी सीट है, जहाँ पर जीत का अंतर नोटा से कम है। नोटा की बढ़ती संख्या को चुनाव आयोग के मतदाता जागरूकता अभियान की सफलता से भी जोड़ा जा सकता है।

इस चुनाव में कांग्रेस ने राजस्थान में अपने साथियों के लिए पांच सीट छोड़ी थी जो महागठबंधन की राह में एक सार्थक कदम था परन्तु बसपा ने इसको शुरूआती झटका दिया। वो बात अलग है कि परिणाम के बाद बसपा और सपा ने कांग्रेस को समर्थन दिया। अगर राजस्थान की पांच सीटों का विश्लेषण करें तो कांग्रेस के सहयोगी डाल इन पांच में से एक सीट जीत पाएं, दो सीट पर दो नंबर पर रहे इनके उम्मीदवार और एक सीट पर तीसरे स्थान पर रही और नोटा के हिसाब से एक नंबर पर रही सीट कुशलगढ़ में तो राष्ट्रीय लोकतान्त्रिक जनता दल के उम्मीदवार छठवें नंबर पर रहा। इन परिणामों से लगता है कि महागठबंधन के दौरान सीटों के बटवारें को लेकर बहुत सावधान रहना पड़ेगा नहीं तो नोटा का प्रतिशत बढ़ने के साथ - साथ पार्टी के परम्परागत वोट बैंक के खिसकने की भी उम्मीद ज्यादा है जो भविष्य के लिए एक नई चुनौती हो सकती है। इसके अलावा भी राजस्थान को देखें तो यहाँ यह चुनाव मुख्यतः दो पार्टियों के बीच होता था परन्तु इस बार अन्य दलों और निर्दलीय ने भी अपना जबरदस्त दमखम दिखाया है, हालांकि आप और सपा जैसे खाता नहीं खोल पाए और ना ही अपना वोट शेयर बढ़ा पाए। अन्य दलों का बढ़ना एक हिसाब से तो सही है परन्तु अगर मुकाबला दो दलों में हो तो जनता का मत सीधा एक के खाते में जाता है जिससे स्थिर सरकार की सम्भावना ज्यादा रहती है। यह नव उदय भविष्य में एक नई राजनीति की पटकथा तैयार कर रहा है जिसके लिए सरकार और पार्टियों को तैयार रहना होगा।

इश्क, विवाह और तलाक

शशि इंद्रजीत

इश्क, ढाई अक्षर का यह लघु शब्द यौवन की दहलीज पर खड़े युवा वर्ग के लिए रोमांस व रोमांच से भरा है। हर युवा धड़कन बेचैन हो जाती है किसी दूसरे दिल में धड़कने के लिए। अपनी मनपसन्द और अपने मन में जब किसी की छवि बस जाती है तो तन-मन व्याकुल हो जाता है उसकी एक झलक पाने को। 'इश्क', सर पर चढ़ कर बोलता है और यह शत-प्रतिशत सही है, युवक हो या युवती जो भी इस रोग से ग्रस्त हुए वो हर समय अपने महबूब के इश्क में डूब जाते हैं, उनके हर भाव में, हर सोच विचार में एक यही भावना निहित हो जाती है। कुछ तो इश्क में इस हद तक डूब जाते हैं कि अपनी जिन्दगी भी दांव पर लगा देते हैं। इस अनुभूति को वही अनुभव कर सकते हैं जो इस अनुभव से गुजरे हैं:

'है इश्क तुमने संवारी हैं
कईं आशिकों की तकदीरें,
हजारों डूब भी गये
इसकी जालिम सी लहरों में।'
'यह इश्क मोहब्बत है चीज क्या बला
डूबा जो इसमें कोई उभर सका है क्या?'

इश्क की दीवानगी में तो कोई भी युवा हर किस्म की सीमा को पार कर जाता है ।

मम्मी-पापा, बहन-भाई, सब रिश्ते गौण हो जाते हैं। इश्क के सामने कोई दीवार नहीं ठहर सकती, इश्क के जुनूँ में कत्ल तक हो जाते हैं। तभी तो इसे 'कमबख्त इश्क' कहा गया है।

इश्क को एक खेल समझ कर कुछ तो अपने आशिक और माशूका को धोखा दे कर उन्हें आयुभर के लिए तड़पने के लिए छोड़ देते हैं, और जो जिद करते हैं अपने साथी को नहीं छोड़ने, उनको विभिन्न प्रकार के लांछन लगा कर या चरित्रहीन बता कर उनके जीवन को बर्बाद करने का कार्य करते हैं। कुछ युवा इश्क को पवित्र मान विवाह के बंधन में बंध जाते हैं।

कुछ युवा मम्मी-पापा के असहमत होने के डर से भाग कर कानूनी कार्रवाई कर विवाह बन्धन में बन्ध जाते हैं। यह काफी सीमा तक घातक सिद्ध होता है विवाह बंधन एक ऐसा पवित्र बंधन है जिसमें दोनों युवक व युवती जब बंध जाते हैं तो यह बंधन सनातन धर्मानुसार सात जन्मों का बंधन है जिसे पति-पत्नी के रूप में आयुपर्यंत निभाना होता है। एक-दूसरे के प्रति, पूर्ण समर्पित हो कर, जिसमें मैं और तुम का भेद समाप्त कर, एकाकार हो कर, गृहस्थ जीवन को सुचारू रूप से चलाना होता है।

यह विवाह तीन तरह के होते हैं

1. कुछ युवा अपनी पसन्द को अपने मम्मी-पापा के समक्ष रखते हैं, और अगर तो वो सहमत हो जाते हैं तो विवाह बंधन में बंधना सरल व सुखद हो जाता है। ऐसे विवाह अधिकतर सफल होते देखे गये हैं।
2. कुछ युवाओं के मम्मी-पापा उनकी पसन्द को नकार देते हैं। उनके लिए एक ही रास्ता बचता है कि वो अपने सभी रिश्तों को छोड़कर अपनी अलग दुनिया बसायें पर यह विवाह भी इतना सफल नहीं होता देखा गया।
3. कुछ युवा मम्मी-पापा के असहमत होने के डर से भाग कर कानूनी कार्रवाई कर विवाह बन्धन में बन्ध जाते हैं। यह काफी सीमा तक घातक सिद्ध होता है विवाह बंधन एक ऐसा पवित्र बंधन है जिसमें दोनों युवक व युवती जब बंध जाते हैं तो यह बंधन सनातन धर्मानुसार सात जन्मों का बंधन है जिसे पति-पत्नी के रूप में

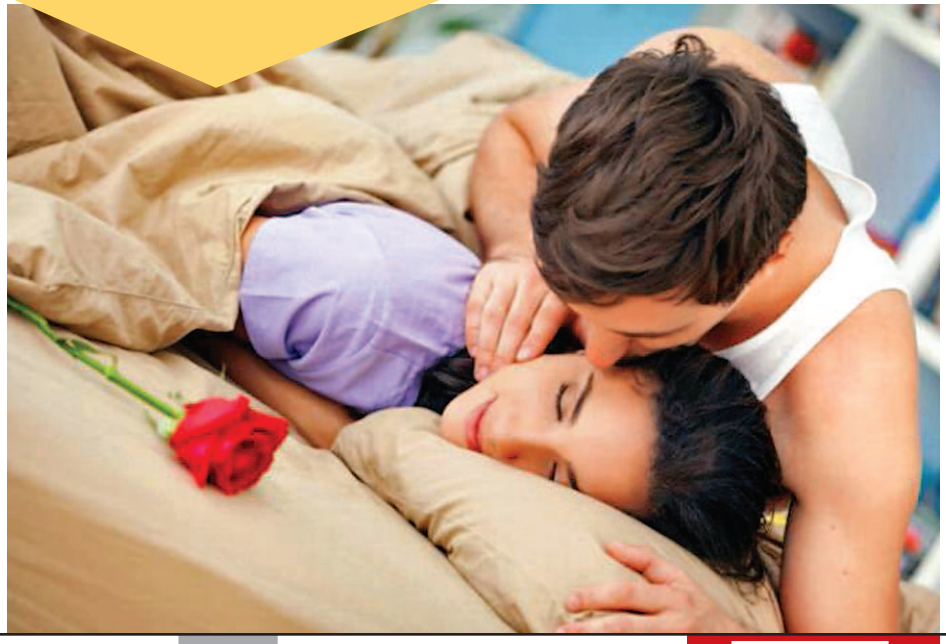

आयुपर्यंत निभाना होता है। एक-दूसरे के प्रति, पूर्ण समर्पित हो कर, जिसमें मैं और तुम का भेद समाप्त कर, एकाकार हो कर, गृहस्थ जीवन को सुचारू रूप से चलाना होता है। भावी पीढ़ी को एक होकर संस्कारों में पिरोना होता है। इसे मात्र आमोद-प्रमोद का साधन नहीं बल्कि गृहस्थ जीवन को सफल बना कर परिवार के लिए, उसके उत्थान के लिए कार्य करने होते हैं। बड़े-छोटे का मान किया जाता है और फिर प्रतिफल में आदर-मान पाया जाता है।

तलाक

'दो दिलों का बिछोह कभी सुखद नहीं होता और फिर अगर बच्चे भी हों तो स्थिति ओर भी दु:खद हो जाती है।'

वैदिक धर्म में तलाक का कहीं उल्लेख नहीं है। तलाक मुगल समाज में प्रचलित था।

भारतीय संस्कृति में भी इसका चलन न था। स्वतंत्रता के पश्चात् भारत में हिन्दू धर्म में कानूनी अधिकार के अंतर्गत लाया गया। समाज का एक वर्ग इसे सही मानता है तो दूसरा इसे गलत।

सदियां बीती तो सामाजिक मान्यताओं में भी परिवर्तन हुआ। आधुनिकता ने भी अपने पांव पसारे। विश्व के नभ पर विज्ञान ने इतनी चमक बिखराई कि जिसने मानव जाति को सुख संसाधनों से सुसज्जित किया। सम्पूर्ण विश्व सोशल मीडिया से जुड़ कर एक ही मंच पर आ गया। अन्य देशों की कुछ अच्छाइयां तो कुछ बुराइयां भी साथ आई जिनका प्रभाव भारतीय समाज पर भी पड़ा।

लिव इन रिलेशनशिप ने अवैध सम्बन्ध बढ़ाने में सहायता की जिससे यह सम्बन्ध जब टूटे तो इनकी चोट से घायल जोड़ो का जीवन नारकीय बन गया।

वो युवा जिन्होंने अपने अपने परिवार की असहमति होने पर विवाह किया तो आर्थिक स्थिति खराब होने पर तलाक की राह चुन ली।

वो युवा जो केवल रूप-सौन्दर्य के लोभ में विवाह बंधन में कोर्ट के सहारे बंधे, कुछ दिन साथ रह कर हर दिन की किच किच से घबरा कर तलाक की शरण में चले गये।

कुछ युवाओं ने स्वयं चोरी से विवाह कर लिया और आर्थिक स्थिति अच्छी न रहने पर फिर तलाक का रूख कर लिया।

आधुनिक समाज में तलाक के बढ़ते आंकड़े समाज के युवाओं की बदलती सोच का कारण भी है। सरकार द्वारा दिये समानता के अधिकार ने यहां बेटियों को भी बेटों के समानांतर अधिकार दिये हैं उनसे नारी जाति में भी आत्मविश्वास बढ़ा है। वो अबला नहीं सबला बन कर सामने आई है, उसने पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर उनके समांतर अपनी तीक्ष्ण बुद्धि व बाहुबल का परिचय दिया है।

परिवर्तन तो हुए लेकिन समाज अभी इस परिवर्तन को बहुत सीमा तक अपना नहीं पाया। विवाह सम्बन्ध चाहे मनपसन्द हो या चाहे परिवार द्वारा आयोजित किये जायें वहां भी तलाक बहुत संख्या में हो रहे हैं। इसका सबसे बड़ा कारण जो सामने आ रहा है वो है टकराव...सहनशक्ति का कम होना भी इसका बहुत बड़ा कारण है क्योंकि आजकल का युवा वर्ग काफी असहिष्णुता से भरा है। जिम्मेदारी निभाने से बचने का भी सरल साधन तलाक बन गया है।

हमें चाहिए कि हम बच्चों को एक दूसरे के प्रति समर्पित भाव से जीने की कला को सिखाना चाहिए ताकि वो अपने जीवनसाथी के साथ अपना जीवन खुशहाली से बिता सकें।

आज कैरियर फ्रंट में और केंद्र में

लाइफ पार्टनर की प्रेरणा और प्रोत्साहन महत्वपूर्ण

चकाचौंध वाले आज के युग में जहां रोमांटिक प्यार बढ़ गया है, रिश्तों का दुनिया भी निराली सी हो रही है, वहीं इसका अंधेरा पक्ष भी सामने आ रहा है। फिल्मी अंदाज में दो लोग मिलते हैं, प्यार में पड़ते हैं, शादी के लिए पारिवारिक उतार-चढ़ाव के बीच वे हमेशा के लिए बंधन की डोर में बंध जाते हैं। हालांकि यह एक संतोषजनक कहानी हो सकती है, वास्तविक जीवन में यह यथार्थवादी नहीं है। आज अतृप्त महत्वाकांक्षाओं के खोखलेपन ने जीवन-निर्वाह की दीवारों को हिला दिया है जिसकी चरमराहट से व्यक्ति, परिवार, समाज सब पीड़ित हो उठे हैं। वर्ष 2016 में कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय के राबर्ट मॉरे ने एक अध्ययन में पाया था कि पति / पत्नी दोनों की शिक्षा का समान स्तर हो तो कैरियर में सफलता के भी समान होने की संभावना है। इससे वास्तविक जिन्दगी पहले की तुलना में आसान हो जाती है। पर इसके साथ ही उनके ब्रेक अप होने की भी घटनाएं सामने आईं जो वाकई में आश्चर्यजनक कही जा सकती है? सामान्य हालात में प्रसन्नचित्त, स्वस्थ रिलेशनशिप बनाए रखना भी एक चुनौतीपूर्ण काम है। महत्वाकांक्षाएं, दम्पतियों की आपस में बढ़ती मांग, कैरियर की सफलता में एक-दूसरे को समय न दे पाना और बच्चों की फरमाइश पूरी न कर पाने से उनके जीवन में कड़वाहट आने लगी है। समाज विज्ञानी एमिली एस्फाहानी स्मिथ ने 2013 में अटलांटिक नामक पत्रिका में लिखा था, 'महत्वाकांक्षा लोगों को आगे बढ़ती है; सम्बन्धों और समुदाय की सीमाएं अपनाकर उन्हें पुराने परिवेश में लाए जाने की जरूरत है। हालांकि उन्होंने यह भी लिखा था कि किसी ऐसे व्यक्ति के रूप में, जिसने हमेशा बड़े सपने देखे हैं, वह अपने जीवन में इस बिन्दु पर अपनी महत्वाकांक्षाओं को त्यागने की कल्पना नहीं कर सकता। हालांकि, 50 साल पहले विवाह करने वाले किसी भी व्यक्ति, जो एक साथ रह रहे हैं, से वैवाहिक जीवन की सफलता के बारे में पूछा जाए तो वे आपको एक ही बात बताएंगे - यह महत्वाकांक्षा या टैप रिकॉर्डर की तरह नहीं है। यह केवल इच्छाशक्ति है कि हम दोनों लोग बेहतर या बदतर हालात में एक-दूसरे के साथ रहे हैं।

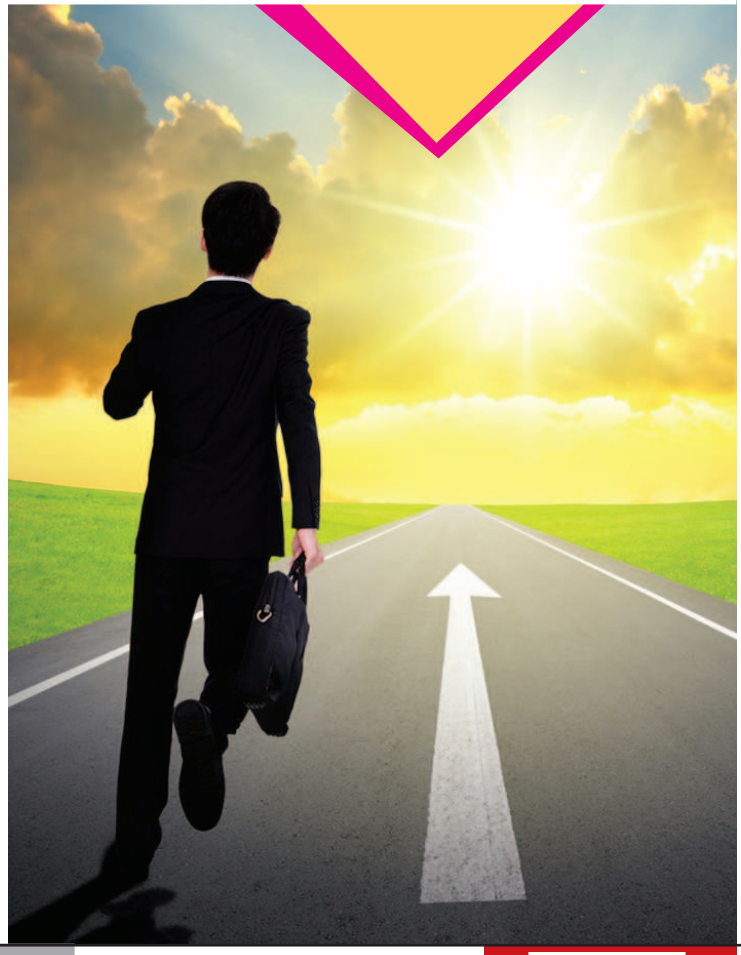

वर्ष 2016 में कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय के राबर्ट मॉरे ने एक अध्ययन में पाया था कि पति / पत्नी दोनों की शिक्षा का समान स्तर हो तो कैरियर में सफलता के भी समान होने की संभावना है। इससे वास्तविक जिन्दगी पहले की तुलना में आसान हो जाती है।

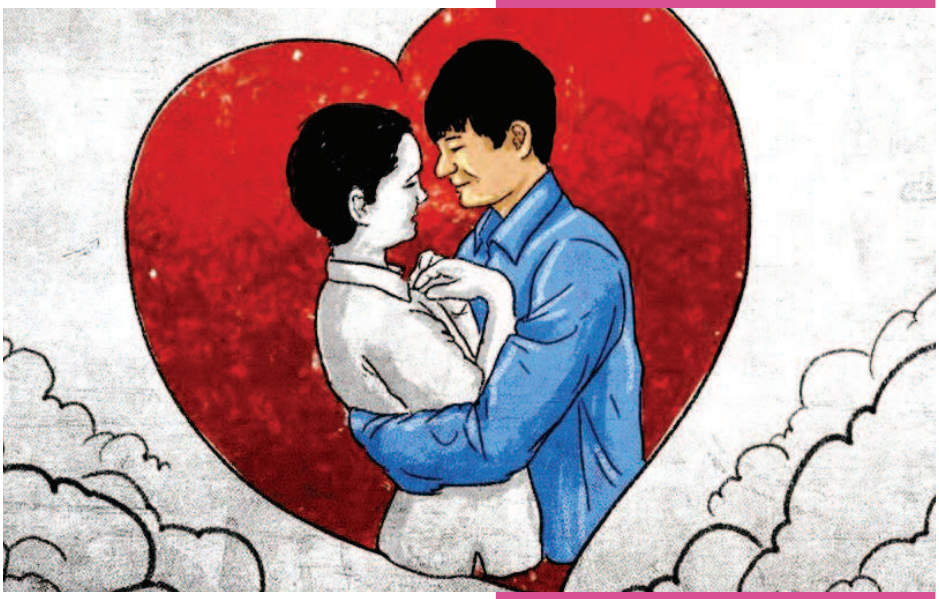

विवाह : एक-दूसरे का पूरक

भारतीय संदर्भ में देखा जाए तो पुरुष और महिलाएं को एक-दूसरे का पूरक बनाने का काम विवाह ही करता है। कमाऊदार पति / पत्नी अपनी कमाई और भौतिक संपदा को बढ़ाते हैं। दोनों की शिक्षा के समान स्तर के चलते शायद यह सच भी है। अमरीका और ब्रिटेन में विवाह की तुलना में हमारे यहां होने वाली शादी और मूल्य प्रणाली बहुत मजबूत है। लेकिन अब यह सवाल तेजी से उठ रहा है कि भारतीय विवाह क्यों विफल हो रहे हैं? आपने सुना होगा कि इसकी वजह प्यार में कमी का आना है। आपने यह भी सुना होगा कि लव मैरिज में प्यार नहीं होता? चाहे अरैंज मैरिज हो या लव मैरिज, जरूरी होता है-दोनों के बीच मोहब्बत हो। आपने भी सफल और असफल विवाहों को देखा होगा। अरैंज मैरिज के मामले में लोग एक समृद्ध दूल्हे या एक खूबसूरत दुल्हन की तलाश करते हैं। पर लव मैरिज में ऐसा नहीं होता है। सोशल एंड इकोनॉमिक रिसर्च इंस्टीट्यूट के शोध से पता चलता है कि साझेदारी का यह फैसला आंशिक रूप से संभावित भविष्य की सफलता की धारणाओं पर आधारित है। देखने में आता है कि जीवनसाथी जो ज्यादा शिक्षित है, उसकी आय ज्यादा होती है। ऐसे में वह दूसरे पर वर्चस्व की कोशिश पर लगा रहता है। अन्य शोधों से यह भी पता चलता है कि लोग मन और मस्तिष्क से विवाह करते हैं। महत्वाकांक्षी दम्पती एक-दूसरे को आगे बढ़ाने में, उनके कैरियर की सफलता में योगदान भी देते हैं। इससे उनके कैरियर की संभावनाओं को कोई नुकसान भी नहीं पहुंचता है। अक्सर पेशेवर महिलाएं अपने पति को उनके एमबीए और अन्य पेशेवर योग्यता को आगे बढ़ाने में मदद करती हैं जिससे उनकी आय में काफी वृद्धि होती है। इसी तरह से नौकरी कर रहे पुरुष आर्ट, नृत्य में दक्ष अपनी पत्नी को भरपूर समर्थन देते हैं।

कुछ सफल जोड़े एक-दूसरे के लिए महान प्रेरक भी रहे हैं। दूसरी तरफ, कैरियर में असंतुलन से नुकसान भी हो सकता है और इससे शादियां टूट भी जाती हैं। एक सफल व्यवसायी का कहना है कि मेरा कैरियर एक एकाउंटेंट के रूप में शुरू हुआ था। जब तक मैंने शादी नहीं की, तब तक मैं एकाउंटेंट ही रहा। शादी करने के बाद मुझे विश्वास और सुरक्षा मिली।

प्रेरणा और प्रोत्साहन महत्वपूर्ण

जीवनसाथी से मिलने वाली प्रेरणा और प्रोत्साहन महत्वपूर्ण होता है। सोशल पूंजी के मामले में एक अच्छा परिणाम यह होता है कि नेटवर्किंग संसाधन कम से कम दोगुने हो जाते हैं। काम खोजने, व्यवसाय स्थापित करने, मार्केट की डीलिंग करने में अच्छी तरह से चुने गए साथी बहुत उपयोगी होते हैं। कुछ सफल जोड़े एक-दूसरे के लिए महान प्रेरक भी रहे हैं। दूसरी तरफ, कैरियर में असंतुलन से नुकसान भी हो सकता है और इससे शादियां टूट भी जाती हैं। एक सफल व्यवसायी का कहना है कि मेरा कैरियर एक एकाउंटेंट के रूप में शुरू हुआ था। जब तक मैंने शादी नहीं की, तब तक मैं एकाउंटेंट ही रहा। शादी करने के बाद मुझे विश्वास और सुरक्षा मिली। मैं महत्वाकांक्षी बना। मैं तो शादी को बड़े ब्रेक के रूप में देखता हूं। शोधों से यह भी पता चला है कि विवाह के बाद लोग अधिक सहज हुए हैं और उनके लिए अनुभवों के नए रास्ते खुले हैं। एशियाई देशों में माता-पिता या परिवार के लोग विवाह सुनिश्चित करते हैं। उनका आधार अपनी संतान के लिए समान स्तर की सामाजिक और पेशेवर स्थिति का होना होता है।

कैरियर फ्रंट में और केन्द्र में

पुरुष के अपने व्यवसाय में अधिक दिलचस्पी रखने के चलते विवाह टूट भी जाते हैं। वैवाहिक सम्बंध विच्छेद होने के मामले बढ़ रहे हैं क्योंकि आधुनिक महिला खुद को उपेक्षित महसूस करती है और वह अपना रास्ता अन्य जगह तलाशने लगती है। इसमें आश्चर्य की कोई बात नहीं है कि आज कैरियर फ्रंट में और केंद्र में है। शहरी लोग जैसे-जैसे पेशेवर तरक्की करते हैं, उनके विवाह में देरी होती जाती है और संतान का जन्म भी देर से होता है। इससे दोनों के बीच तनाव बढ़ता है। इसका असर विवाह पर पड़ता है। ऐसे लोगों की लगभग हर चीज उनके कैरियर से जुड़ी होती है।

अपनी बेवसाइट और मोबाइल एप बनवाओ
सस्ते में अपने नाम और बिजनेस को चमकाओ
www.querynext.com
Querynext Technology
Contact - Akram Khan
+919967207816
akramkhan0889@gmail.com

न्यू इंडियंस के बीच

न्यूक्लियर फैमिली को ढूंढना आसान

'हम कौन थे, क्या हो गये हैं, और क्या होंगे अभी आओ विचारें आज मिल कर, यह समस्याएं सभी भू-लोक का गौरव, प्रकृति का पुण्य लीला स्थल कहां फैला मनोहर गिरि हिमालय, और गंगाजल कहां संपूर्ण देशों से अधिक, किस देश का उत्कर्ष है उसका कि जो ऋषि भूमि है, वह कौन, भारतवर्ष है' राष्ट्रकवि मैथली शरण गुप्त की यह पंक्तियां उस मर्मान्तक वेदना का अनुभव है जो उन्होंने अपनी अमर कृति 'भारत-भारती' में लिखी है। भारत भारती 1912-13 में लिखी गई थी। उस समय के जो हालत थे, आज स्थिति उससे ज्यादा अलग नहीं है। गुप्त जी ने 'भारत भारती' क्यों लिखी, इसका उत्तर देते हुए उन्होंने 'भारत भारती' की प्रस्तावना में लिखा है-

यह बात मानी हुई है कि भारत की पूर्व और वर्तमान दशा में बड़ा भारी अन्तर है। अन्तर न कहकर इसे वैपरीत्य कहना चाहिए। जो आर्य जाति कभी सारे संसार को शिक्षा देती थी, वही आज पद-पद पर पराया मुँह ताक रही है! ठीक है, जिसका जैसा उत्थान, उसका वैसा हीं पतन! परन्तु क्या हम लोग सदा अवनति में हीं पड़े रहेंगे? उनकी यह पंक्ति देश के लिए ही नहीं, परिवार के लिए भी सटीक बैठती हैं। सवाल उठता है कि परिवार की परिभाषा क्या है। 'हम परिवार हैं।' यह एक पूर्ण वाक्य है जो आम हित से बंधे आपसी सम्बंधों को दर्शाता है। जबकि 'हम एक परिवार हैं' का अलग अर्थ है और वह रक्त सम्बन्धों को दर्शाता है। भारतीय परिवार को मजबूत, स्थिर, लचीला और स्थायी माना जाता है। ऐतिहासिक रूप से भी भारत में पारंपरिक और प्रेमयुक्त परिवार को संयुक्त परिवार की संज्ञा दी जाती रही है। संयुक्त परिवारों में तीन से चार जीवित पीढ़ियां होती हैं, जिनमें चाचा, चाची, भतीजे, भतीजे और दादा- दादी एक ही घर में रहते हैं। परिवार का मुखिया आम तौर पर वरिष्ठ पुरुष होता है। उसकी वरिष्ठता, अनुभव और अच्छे फैसले का सभी सम्मान करते है। पारिवारिक विवादों के मामले में मुखिया न्यायाधीश के रूप में कार्य करता है।

नौकरी : परिवारों के टूटने का प्रमुख कारण

बंधों के बंधन के माध्यम से एक-दूसरे से जुड़े होते हैं। बच्चे अपने चाची, चाचा, दादा दादी और चचेरे भाई के साथ घनिष्ठ संपर्कों में बड़े होते हैं। पर आज हम ऐसे युग में रह रहे हैं जो संयुक्त परिवार प्रणाली टूट रही है। न्यूक्लियर फैमिली की योजना आकर ले चुकी है। ऐसा इसलिए हुआ कि व्यक्तिगत सोच को समाज में प्रमुखता प्राप्त होने लगी और युवा लोग पुराने संयुक्त तंत्र से पीड़ित होने लगे। इसकी वजह भी हैं। न्यूक्लियर परिवारों के पनपने के अन्य कारकों में सबसे बड़ा कारक नौकरी का होना है। बेहतर नौकरी के अवसरों के लिए पुरुषों और महिलाओं को प्रमुख शहरों और कस्बों में अपने परिवार से बाहर निकलने के लिए मजबूर होना पड़ा। दूसरी ओर अक्सर माता-पिता भावनात्मक रूप से अपने उस स्थान से जुड़े रहे जहां उन्होंने अपने जीवन का अधिकांश हिस्सा व्यतीत किया था। ऐसे लोगों ने बड़े ही दुखी मन से अपने बच्चों के साथ रहना स्वीकार किया। उनकी हमेशा ही शिकायत रही है कि बच्चे उन्हें अपना जीवन जीने नहीं देते हैं।

न्यूक्लियर परिवार को अत्यधिक स्वतंत्रता की विचारधारा

ऐसे में एकल परिवारों पर बड़ा असर हुआ। न्यूक्लियर परिवारों को जीवन जीने के तरीकों में अत्यधिक स्वतंत्रता मिली। उन्होंने पुरानी

हमें यह मानकर चलना चाहिए कि 'वसुधैव कुटुंबकम' की अवधारणा हमारे डीएनए में शामिल है। अपनी पीढ़ियों के लिए सदियों पुराने ज्ञान को संरक्षित रखना हमारा कर्तव्य होना चाहिए। आज के युवा शायद यह सोचते हैं कि वे दो विपरीत दुनिया में फंस गए हैं। उन्हें कभी-कभी उलझन भी महसूस होती है। ऐसे में जाहिर है, संयुक्त परिवार प्रणाली और न्यूक्लियर परिवारों दोनों के फायदे और दोषों पर बहुत कुछ कहा जा सकता है।

विचारधाराएं छोड़ दी जो उन्हें विरासत में मिली थी। इसका एक बड़ा लाभ भी हुआ। उन्हें अपनी पहचान बनाने के लिए बड़ा अवसर हाथ लगा। शहरी क्षेत्रों के बारे में यही सच है, जहां न्यूक्लियर फैमिली ही है। इस तथ्य से इनकार नहीं किया जा सकता कि सामाजिक-आर्थिक कारकों ने इसमें अपनी बड़ी भूमिका निभाई है।

आज भारी मन से यह स्वीकार करना ही पड़ेगा कि वर्तमान जीवनशैली सांस्कृतिक मूल्यों, परंपराओं और रीति-रिवाजों को गंभीर नुकसान पहुंचा रही है। ये मूल्य ऐसे थे जो पीढ़ी दर पीढ़ी चले आ रहे थे। हमें यह मानकर चलना चाहिए कि 'वसुधैव कुटुंबकम' की अवधारणा हमारे डीएनए में शामिल है। अपनी पीढ़ियों के लिए सदियों पुराने ज्ञान को संरक्षित रखना हमारा कर्तव्य होना चाहिए। आज के युवा शायद यह सोचते हैं कि वे दो विपरीत दुनिया में फंस गए हैं। उन्हें कभी-कभी उलझन भी महसूस होती है। ऐसे में जाहिर है, संयुक्त परिवार प्रणाली और न्यूक्लियर परिवारों दोनों के फायदे और दोषों पर बहुत कुछ कहा जा सकता है।

कहने की जरूरत नहीं कि बदलते समय के साथ समाज भी विकसित होते हैं और प्रगतिशील रीति-रिवाजों और प्रथाओं में आने वाली किसी भी प्रक्रिया का स्वागत सभी के द्वारा किया जाना चाहिए। उदाहरण के तौर पर, बाल विवाह, दहेज के खतरे, महिलाओं के खिलाफ हिंसा और अंधविश्वासपूर्ण रीति-रिवाजों जैसे दमनकारी सामाजिक समस्याओं को तोड़ने के लिए महिलाओं को शिक्षित करना आवश्यक है। शिक्षा के माध्यम से महिलाओं को न केवल अधिकार दिया जाना चाहिए, बल्कि उन्हें अंधविश्वासों और रीति-रिवाजों के खिलाफ लड़ाई में प्रोत्साहित भी किया जाना चाहिए, भले ही पुरुष-वर्चस्व वाले पितृसत्तात्मक समाज की तरफ से प्रतिरोध होता हो।

2011 की जनगणना आंकड़ों के आधार पर किए गए शोध के अनुसार दिल्ली में 69.5 प्रतिशत घरों में केवल एक विवाहित जोड़े हैं जबकि 6 प्रतिशत से भी कम भारतीय परिवारों में 9 या उससे अधिक लोग रह रहे हैं। न्यूक्लियर फैमिली (पति + पत्नी + बच्चे) लगातार बढ़ रही हैं। न्यू इंडियंस के बीच न्यूक्लियर परिवारों को ढूंढना सबसे आम बात है। गुप्त जी की ही पंक्तियों से लेख का समापन भी है।

मानस भवन में आर्यजन जिसकी उतारें आरतीं-
भगवान्! भारतवर्ष में गूँजे हमारी भारती।

अब श्रीगंगानगर में
24x7 आपातकालीन सेवाएँ फार्मेसी एम्बयूलेंस
मेदांता
दी मेडिसिटी
जीवन को समर्पित
एस.एन सुपर स्पेशियलिटी हॉस्पिटल
• बाईपास सर्जरी
• वाल्व सर्जरी
• एन्जियोप्लास्टी
• एन्जियोग्राफी
• पेसमेकर लगवाना
• न्यूरो सर्जरी
• स्पाईन सर्जरी
• ट्रोमा एवं हेड इंजरी
• घुटना एवं कूल्हा प्रत्यारोपण
• हर तरह के फैक्चर के ऑप्रेशन
• ऑर्था स्कोपी सर्जरी
नाथावाली, हनुमानगढ़-सुरतगढ़ बाईपास
श्रीगंगानगर (राजस्थान)
मो. 74130-34560, 0154-2970360

जिन्दा लाश बना देता है बलात्कार

आज एक तरफ जब दुनिया इतनी आगे बढ़ चुकी है देश हर रोज नई ऊँचाईयों को छू रहा है दिन-प्रतिदिन प्रगति कर रहा है। महिलाओं के हक की बातें की जा रही हैं बेटियों को पढ़ाने और भ्रूण हत्या को रोकने का हर संभव प्रयास किया जा रहा है। मगर वहीं दूसरी तरफ महिलाओं और बेटियों के प्रति बढ़ते अपराध कम होने का नाम ही नहीं ले रहे बल्कि हर साल इन अपराधों की दर में बढ़ोतरी होती जा रही है।

मैं पूछती हूँ क्या कसूर था उस 60 साल की बूढ़ी औरत का जो इस उम्र में दरिंदगी का शिकार हो गई है, है कोई जवाब? नहीं अब कोई जवाब नहीं। मैं कहती हूँ अगर उस लड़की की जगह तुम्हारी खुद की बेटी होती क्या तब भी क्या ऐसा ही बर्ताव करते क्या ऐसे ही ताने मारते उसे, नहीं न।

15.2 में एक महिला के साथ होता है बलात्कार।

34,651 महिलाओं के साथ 2015 में रेप हुआ।

क्या कहता है हमारा समाज

समाज ये शब्द हम लोगों से ही मिलकर बना है मगर जब किसी नारी के साथ कुछ गलत होता है तो ये समाज तीन टुकड़ों में बँट जाता है। कुछ लोग उस लड़की की ही गलती निकालने लगते हैं जिसने अभी मौत से भी बदतर दरिंदगी का सामना किया है। उनके मुँह से सबसे पहले निकलता है अरे उसने कपड़े ही ऐसे पहन रखे थे अरे वो बाहर बहुत निकलती थी और पढ़ा-लिखा लो ये तो होना ही था वाह अब हमारे कपड़े हमारा काम करना और हमारी पढ़ाई से हमारा चरित्र परखा जाता है ये सरासर गलत है फिर भी मैं मान लेती हूँ लेकिन क्या किसी के पास इस बात का जवाब है कि जो नन्हीं सी बच्ची अभी ठीक से चलना नहीं सीख पाई थी उसके कपड़ों में उसके रहन-सहन में क्या खराबी थी, क्या कसूर था उसका क्योंकि वो नारी है बेटी है तो उसे उपभोग की चीज समझ ली वो तुम्हारी क्या थी या किसी की क्या थी ये प्रश्न एक बार भी नहीं आया जहन में। रिश्तों का इंसानियत का गला घोंटकर तुम हैवान बन गए। मैं पूछती हूँ क्या कसूर था उस 60 साल की बूढ़ी औरत का जो इस उम्र में दरिंदगी का शिकार हो गई है, है कोई जवाब? नहीं अब कोई जवाब नहीं। मैं कहती हूँ अगर उस लड़की की जगह तुम्हारी खुद की बेटी होती क्या तब भी क्या ऐसा ही बर्ताव करते क्या ऐसे ही ताने मारते उसे, नहीं न। अरे वो लड़की पहले ही हैवानियत का शिकार हो चुकी है जो रही सही कसर रह जाती है वो समाज पूरी कर देता है। कुछ लोग इस जुर्म के खिलाफ आवाज उठाते हैं लड़ते हैं कैन्डल मार्च निकालते हैं बहुत साहसी होते हैं वो लोग जो किसी गैर के साथ हुई दरिंदगी की लड़ाई लड़ते हैं उसमे अपने मतलब का मसाला नहीं ढूँढ़ते। सलाम है मेरा उन लोगों को जो इस अपराध के खिलाफ आवाज उठाने का हौंसला रखते हैं। कुछ लोग इन सब बातों पर ध्यान ही नहीं देते अखबार उठाया पढ़ लिया रख दिया दो-चार बार आपस के लोगों में जिक्र कर दिया बात खत्म कौन सा उनकी कुछ लगती थी वो लड़की। पाँव तले जमीन तो तब खिसकती है जब किसी अपनी के साथ कुछ ऐसा होता है। अरे वो भी तो किसी की माँ, बहन, बेटी, बहू, दोस्त, भतीजी-भांजी या फिर कोई और रिश्तेदार होती ही है मगर नहीं जब तक हमारी अपनी नहीं होती आँखें नहीं खुलती हैं।

एक नजर आँकड़ों पर

महिला सुरक्षा से जुड़े तमाम कानून और बहसों के बावजूद देश में अपराध घट नहीं रहे हैं। एनसीआरबी की हालिया रिपोर्ट्स के अनुसार देश में हर घंटे में चार बलात्कार होते हैं। भारत में रेप से जुड़े कुछ आंकड़ें - 15.2 में एक महिला के साथ होता है बलात्कार। 34,651 महिलाओं के साथ 2015 में रेप हुआ। हर 3.8 दिन में पुलिस कस्टडी में एक बलात्कार होता है। हर चार घंटे में एक गैंगरेप की वारदात होती है। 2,113 महिलाओं के साथ सन् 2015 में गैंगरेप की वारदात हुई। हर 2 घंटे में एक असफल बलात्कार का प्रयास होता है। 4,437 बलात्कार के प्रयास हुए सन् 2015 में। 32 प्रतिशत बलात्कार के मामले सन् 2015 में लंबित रहे सिर्फ 29 प्रतिशत मामलों में ही मिली सजा। इंसानियत को झझकोर कर रख देने वाले निर्भयाकाण्ड के बाद अब कठुआ और मदरसा घटनाओं को लेकर लोगों में काफी आक्रोश रहा।

साल 2012 में दिल्ली के चर्चित निर्भया गैंगरेप मामले में लाखों की तादाद में लोग सड़कों पर उतर आये थे।

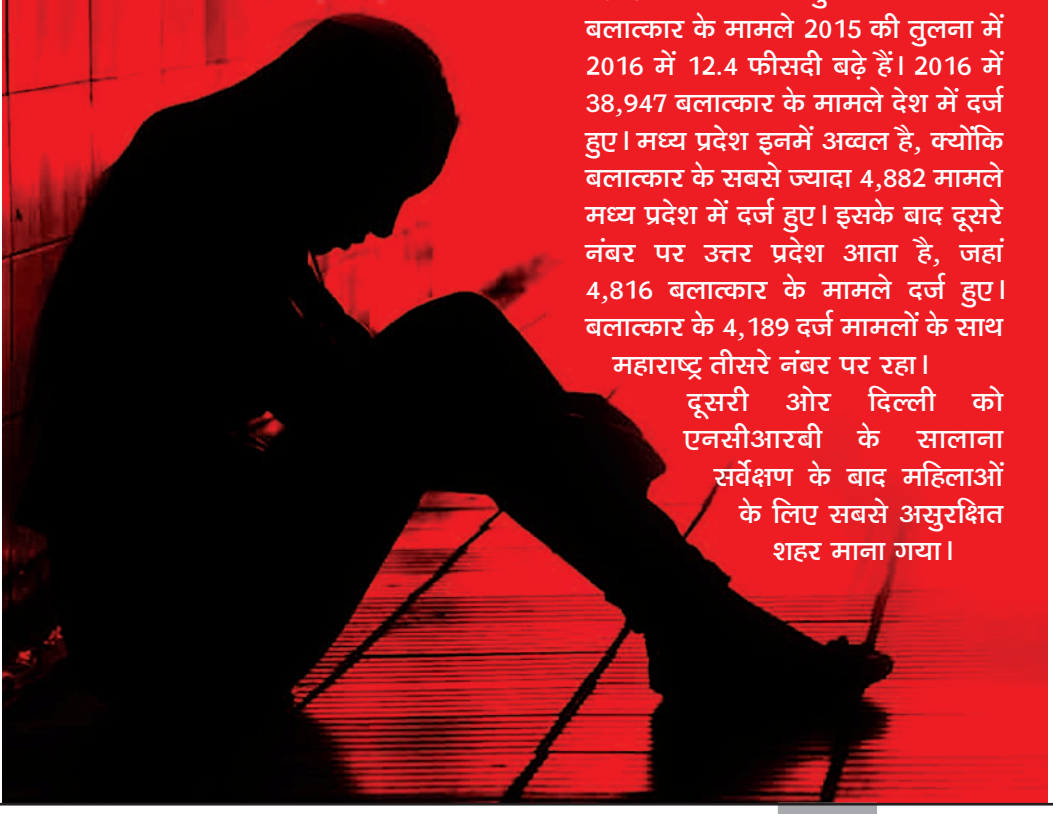

नेशनल क्राइम रिकॉर्ड्स ब्यूरो के 2016 की रिपोर्ट के मुताबिक भारत में बलात्कार के मामले 2015 की तुलना में 2016 में 12.4 फीसदी बढ़े हैं।

इस खौफनाक मामले के बाद ये जनता के आक्रोश का ही असर था कि वर्मा कमिशन की सिफारिशों के आधार पर सरकार ने नया एंटी रेप लॉ बनाया। इसके लिए आईपीसी और सीआरपीसी में तमाम बदलाव किए गए, और इसके तहत सख्त कानून बनाए गए. साथ ही रेप को लेकर कई नए कानून बनाए गए।

नेशनल क्राइम रिकॉर्ड्स ब्यूरो के 2016 की रिपोर्ट के मुताबिक भारत में बलात्कार के मामले 2015 की तुलना में 2016 में 12.4 फीसदी बढ़े हैं। 2016 में 38,947 बलात्कार के मामले देश में दर्ज हुए। मध्य प्रदेश इनमें अव्वल है, क्योंकि बलात्कार के सबसे ज्यादा 4,882 मामले मध्य प्रदेश में दर्ज हुए। इसके बाद दूसरे नंबर पर उत्तर प्रदेश आता है, जहां 4,816 बलात्कार के मामले दर्ज हुए। बलात्कार के 4,189 दर्ज मामलों के साथ महाराष्ट्र तीसरे नंबर पर रहा।

दूसरी ओर दिल्ली को एनसीआरबी के सालाना सर्वेक्षण के बाद महिलाओं के लिए सबसे असुरक्षित शहर माना गया।

कठोर होनी चाहिए इस घिनौने अपराध की सजा

एक लड़की जब अपनी इज्जत तार-तार होने के बाद भी बड़ी हिम्मत करके खुद को समेट कर अपने साथ हुई नाइंसाफी की लड़ाई लड़ने के लिए खड़ी होती है। तब भी उसे बहुत ही मुश्किल से न्याय मिल पाता है। अधिकांश मामलों में तो महिलाएं आत्महत्या कर लेती हैं क्योंकि वो पुलिस और दुनिया समाज के आगे खुद को साबित करते करते थक चुकीं थी। कई बार तो जब पीड़िता अपनी शिकायत दर्ज करवाने जाती है तो सामने वाली पार्टी के दबाववश सब उसे अपनी शिकायत वापस लेने की सलाह देते हैं। वो हैवान जिसने एक मासूम की जिन्दगी को तबाह कर दिया जीते जी जिन्दा लाश बना दिया उसके सारे सपने उसकी जिन्दगी जीने की चाह सब खत्म कर दी वो खुलेआम सीना चौड़ा करके घूमता है और वो निर्दोष डरी सहमी सी कहीं खुद को कैद कर लेती है। मैं पूछती हूं क्या फांसी और उम्रकैद की सजा काफी है ऐसे अपराधियों के लिए अगर काफी है तो फिर हर साल ऐसी घटनाओं की दर में तेजी से इजाफा क्यों हो रहा है? क्यों उन हैवानों के जेहन में कानून या सजा का कोई भय नहीं है? क्यों इस अपराध के बाद भी गुनाहगार चैन की सांस ले रहे हैं? सरकार को इस मुद्दे पर बहुत ही गहराई से सोचने की जरूरत है। ऐसे गुनाहगारों को इतनी कड़ी से कड़ी सजा देनी चाहिए कि कोई दूसरा शख्स ये अपराध करने से पहले हजार बार सोचें। सजा के अहसास मात्र से उनकी रूह कांप जाए। सरकार और समाज दोनों को ऐसी घटनाओं पर पीड़िता की हर संभव मदद करनी चाहिए आगे आकर उसको हिम्मत देनी चाहिए न कि उसको ताने मार-मार कर आत्महत्या करने को मजबूर करना चाहिए। ऐसे मामलों पर पुलिस को भी जल्द से जल्द सख्त कार्यवाही करनी चाहिए। जांच के नाम पर कहीं भी पीड़िता का शोषण नहीं करना चाहिए। भारत देश तभी एक सक्षम देश बन सकता है जब हमारे देश की महिलाएं पूरी तरह सुरक्षित होंगी। जब पुरुष प्रधान इस देश में नारी को भी उसका हक सम्मान और बराबरी का दर्जा प्राप्त होगा तब भारत पूरी तरह से एक मिसाल कायम कर देगा। पूरे विश्व में भारत का सबसे ऊँचा और सम्माननीय स्थान होगा।

नोचते हो तुम जिस्म उसका
उसकी आबरू मिटाते हो
छलनी करके उसकी रूह को
उसे जिन्दा लाश बनाते हो।

रूपल सिंह

2019 की नई चुनौतियां

भारत सरकार ने कर सुधारों को प्रशासित करने के लिए 'रैपिड-राजस्व, जवाबदेही, सूचना और डिजिटलकरण' भी पेश किया है। पर इसका अपेक्षित लाभ नहीं मिल सका है। सबसे बड़ी चुनौतियों में से एक तेल की कीमतों में वृद्धि है।

वर्ष 2019 आ गया है। नया उल्लास होगा, नई चुनौतियां होंगी। 2019 में लोकसभा चुनाव भी हो जाएंगे। 2018 की चुनौती से काफी कुछ सीखकर हम आगे बढ़ेंगे। हमने यह भी देखा है कि 2018 की चुनौती से हम कैसे निपटे हैं, हमने क्या नहीं किया। पिछली चुनौतियों का अब हमारे-आपके लिए क्या मतलब है? पिछले साल की तरह से इस साल भी वर्ष अलग नहीं होगा। हमने पहले चुनौतियों को देखा है। चुनौतियों को समझने, उसका निदान करने में लोगों का समूह भी वीडियो में बना रहा है। इस साल भी वीडियो बनेंगे और भी धुंआधार तरीके से। चुनौतियां तेजी से बढ़ी रहीं हैं और सोशल मीडिया पर उसका एक प्रमुख प्रारुप रहा है। सामान्य चुनौतियों को हम किस रूप में लेते हैं। कुछ लोग रचनात्मक होते हैं और इंटरनेट के माध्यम से खुद को बाहर निकाल देते हैं। सब कुछ हमारे ऊपर ही निर्भर है।

चुनौती का मतलब है-'इन माई फीलिंग्स' यानी हम कैसा-कैसा महसूस करते हैं। हम चुनौतियों पर नजर डालें और देखें कि भारत कैसे उनसे लड़ने की योजना बना रहा है। 2019 में आम चुनाव से पहले प्रधान मंत्री के रूप में नरेंद्र मोदी के कार्यकाल के लिए आम बजट पेश नहीं सकता है। यह अंतरिम बजट ही होगा। वर्ष 2018-19 के आर्थिक सर्वेक्षण में जीडीपी में भारत की अनुमानित वृद्धि 7-7.5 प्रतिशत थी। यह वृद्धि विश्व बैंक द्वारा जारी 2018 ग्लोबल इकोनॉमिक्स प्रॉस्पेक्ट (जीईपी) के अनुसार है। इस साल भारतीय अर्थव्यवस्था ने अप्रत्यक्ष करदाताओं की संख्या में 50 प्रतिशत की वृद्धि देखी है। विश्व बैंक की बिजनेस लिस्ट की भारत ने आसानी से 100 रन बनाए हैं। सुधारों में मोदी सरकार ने कई पुरस्कार जीते हैं। पर ऐसे कई ऐसे क्षेत्र हैं, जहां पर अभी भी भारत में कारोबार किए जाने की गति को और तेज करने के लिए सरकार के ध्यान देने की आवश्यकता है। सीमा पार व्यापार में सुधार दिखाई नहीं दिखा है। व्यवसाय सफल बनाने में कई प्रक्रियाएं शामिल हैं। नौकरशाही अक्सर पूरी प्रक्रिया को धीमा कर देती है।

हालांकि, भारत सरकार ने कर सुधारों को प्रशासित करने के लिए 'रैपिड-राजस्व, जवाबदेही, सूचना और डिजिटलकरण' भी पेश किया है। पर इसका अपेक्षित लाभ नहीं मिल सका है। सबसे बड़ी चुनौतियों में से एक तेल की कीमतों में वृद्धि है। सऊदी अरब में उच्च तेल की कीमतें भारत में कीमतों पर काफी प्रभाव डालती हैं। भारत तीसरा सबसे बड़ा तेल आयातक है। कच्चे तेल की उच्च कीमतों से व्यापार घाटे में वृद्धि होगी। इस पर ध्यान दिया जाना जरूरी होगा।

भारत मुख्य रूप से कृषि अर्थव्यवस्था वाला देश है। वैश्विक कृषि उत्पादन का 7.68 प्रतिशत यह पैदावार है। भारत की अर्थव्यवस्था में कृषि क्षेत्र का 6.1 प्रतिशत योगदान है जो दुनिया के औसत से अधिक है। इस क्षेत्र में श्रमिकों का 50 प्रतिशत से अधिक का योगदान है। भारतीय निर्यात का 13.2 प्रतिशत हिस्सा कृषि उत्पाद है। पिछले साल इस क्षेत्र में उत्पादकता वृद्धि स्थिर रही है। इसका भारतीय अर्थव्यवस्था पर खराब असर दिखा है। पिछले कुछ वर्षों से भारतीय बैंक बढ़ते एनपीए के मुद्दों से जूझ रहे हैं। बढ़ते एनपीए और कम लाभ की वजह से रियल एस्टेट क्षेत्र में बैंक ऋण की हिस्सेदारी 2016 में 68 प्रतिशत से बढ़कर 17 प्रतिशत हो गई है। बैंक अचल संपत्ति पर क्रेडिट देने के लिए तैयार नहीं हैं। भारतीय अर्थव्यवस्था के एक बड़े हिस्से में योगदान देने वाले एमएसएमई क्षेत्र को भी बैंकिंग क्षेत्र से क्रेडिट की कमी का सामना करना पड़ रहा है।

कहने की जरूरत नहीं कि आम लोग हो या खास, सबको उम्मीदें हजार हैं और सरकार के सामने चुनौतियां अपार हैं। भारत हर तरह की चुनौती से पार पाने में काफी हद तक सक्षम है। खर्चीले चुनाव अभियान के बाद सत्ता संभालने वाली सरकार के समक्ष घरेलू और वैश्विक पटल पर अनेक चुनौतियां रहेंगी। इन चुनौतियों में वे मुद्दे और उपलब्धियां प्रमुख होंगी जिनके कारण जनता सरकार को सिंहासन पर बैठाएगी। बकौल एक शायर...

'परेशानियों से भागना आसान होता है
हर मुश्किल जिन्दगी में एक इम्तिहान होता है'
इसी तरह
'चलता रहूंगा पथ पर,
चलने में माहिर बन जाऊंगा
या तो मंजिल मिल जाएगी या
अच्छा मुसाफिर बन जाऊंगा।'

JMJ TRAVELES
आपके शहर की शान
राजस्थान में कही पर भी सभी प्रकार की कार टैक्सी के मासिक या वार्षिक अनुबंध के लिए संपर्क करे।
अधिक जानकारी के लिए संपर्क करे।
मोबाइल नं. +91 9784005246

प्यार का ये कैसा रूप...

एसिड अटैक

अनिता सुधीर श्रीवास्तव

प्यार जीवन का आधार है, एहसासों का खूबसूरत बंधन है। प्रेम को परिभाषित करना असंभव है, प्रत्येक के लिए प्यार एक अलग अर्थ लिए हुए है कहीं सौंदर्य, कहीं गुण तो कहीं एकाधिकार की भावना लिए सामने आ जाता है। इस ढाई आखर मे अनेक भावों का सम्मिश्रण है, पवित्रता, त्याग समर्पण और एक दूसरे की खुशी के लिए सदैव प्रयत्नशील रहना ही प्रेम की निशानी है, प्रेम में एक मजबूत आकर्षण, एक अनोखा बंधन एक प्यारे से रिश्ते में हो जाता है। ये एक ईश्वरीय पवित्र भावना है जो वही समझ सकता है जिसका मन साफ हो, हृदय छल रहित हो। कोई भाषा नहीं है प्यार की, सभी भाषा सभी प्राणियों में एक जैसी ही है, ये प्यार की पराकाष्ठा ही है।

समाज में सभी व्यक्ति अपनी अलग पहचान लिए हुए है। सभी लोग एक-दूसरे के प्रति स्नेह और सहृदयता का भाव रखते हैं। प्रत्येक व्यक्ति का व्यवहार कुछ लक्ष्य पूर्ति के प्रयास की अभिव्यक्ति है। जब उस प्रयास में असफल होता है तो वह मानसिक कुंठाओं से ग्रसित हो जाता है उसकी सोचने-समझने की शक्ति में एक नकारात्मक भाव आ जाता है।

आज का समय चल नहीं अपितु दौड़ रहा है, सब कुछ अतिशीघ्रता से प्राप्त करना चाहते हैं, यही प्यार में देखने को मिल रहा है। प्यार की गहराईयों और उसकी मूल भावना को समझ नहीं पाते और प्रेम पर अपना एकाधिकार जताते है। किसी ने विवाह से इनकार कर दिया, किसी ने शारीरिक संबंध बनाने से या फिर दहेज जैसा संवेदनशील मामला हो, ये इनकार इनकी पुरुष मानसिकता को आहत करता है और बदला लेने का एक आसान और वीभत्स तरीका खोज निकाला एसिड अटैक के रूप में। ये प्यार का कौन सा रूप समाज में आ गया है।

महिलाओं पर होते ज्यादा एसिड अटैक

एसिड अटैक के मामले मे अधिकतर महिलायें ही भुक्तभोगी होती है। ये प्यार का ऐसा भयावह रूप है जो अपने ही साथी पर अपनी हीन भावना के चलते और बदला लेने की नीयत से ये घृणित कार्य कर करवाता है। ये कार्य क्षणिक भावावेश मे तो

नहीं हो सकता। योजनाबद्ध तरीके से कार्य करना पड़ता होगा, स्थान के चयन से लेकर तेजाब खरीदने और उस पर क्रियान्वन के दौरान क्या एक बार भी ये ख्याल नहीं आता होगा कि इसका अंजाम क्या होगा।

महिलाओं को शारीरिक और मानसिक कष्ट देना कुंठित पुरुष वर्षों से करता आया है। पुरातन समाज में बदला लेने के लिए वो महिलाओं की नाक काटते थे, ऐसी क्रूरतम सजा देते थे कि जीवित रहते हुए भी जिंदा रहना दूभर हो जाये। आज के समय मे ये धारदार हथियार अब तेजाब हमला हो गया है ये प्यार का ऐसा घिनौना रूप है कि जितनी भी निंदा की जाए कम ही है। महिलाओं पर अत्याचार, शोषण, कत्लेआम ये शब्द बहुत छोटे हो जाते हैं एक तेजाब पीड़िता की तकलीफ के आगे। इसकी चोट इतनी घातक है कि महिला के जिस्म के साथ-साथ उसकी आत्मा भी हर समय जलती रहती है।

आये दिन ऐसी खबरें सुर्खियां बनती है, जोर शोर से बहस होती है कोर्ट में मुकदमा चलता है, लंबा इलाज चलता है, कई बार सर्जरी और दवाओं का खर्चा परिवार के आर्थिक हालात को बहुत कमजोर कर देता है। इतनी जलन होती है कि आंसुओं का खारापन भी सहन नहीं होता। इतनी शारीरिक और मानसिक यातनाएं झेल कर ये पल पल मरने के लिये बच जाती है।

ये कुंठित पुरुष प्यार और समाज के नाम पर कलंक बन इतना वहशीपूर्ण कार्य कर उसी चेहरे पर तेजाब फेंकते हैं जिसको कभी प्यार में चेहरे की चाँद से उपमा दी होगी।

पीड़िता और हमलावर दोनों का चेहरा ही इस समाज का आईना है। कानून को कठोर बनाने की और समाज के सोच बदलने की आवश्यकता है। कानून मे अभी कोई ऐसी धारा नहीं है जिसमें इस हथियार के इस्तेमाल पर कड़ी सजा का प्रावधान हो। भारत मे इसको रोकने के लिए Stop Acid Attack अभियान चलाया जा रहा है। इस अभियान से जुड़े लोग कठोर नियम बनाने और समाज में बदलाव की मुहिम चला रहे हैं।

बनें सख्त कानून

एसिड बिक्री पर कानून सख्त किये गए हैं, खरीदने वाले को अपना पहचान पत्र दिखाना होगा, लेकिन क्या कानून बनाने से समस्या हल हो जाएगी, भारत जैसे विशाल देश में, सुदूर इलाकों में बिक्री रोकना और खरीदने पर नजर रखना कितना संभव होगा इसका कितना पालन होगा जहां नियम का खुलेआम उल्लंघन किया जाता है। इसके साथ ही कोर्ट में त्वरित कारवाई भी हो। साथ ही साथ समाज के सोच में बदलाव लाना अति आवश्यक है। जब तक सोच मे परिवर्तन नहीं होगा, कोई भी कानून महिलाओं पर अत्याचार बंद नहीं कर सकता। एक अभियान चलाया जाए कि महिलाओं के प्रति सम्मानजनक व्यवहार हो। पीड़िता और उसके परिवार के यातनामय जीवन के बारीकियों से समाज में एक संवेदनात्मक वातावरण और अलख जगाने की आवश्यकता है। जिस तरह आज प्रेमी रिश्ता बना रहे और इंकार करने पर चेहरा बिगाड़ तड़पने के लिए छोड़ दे, ये समझाना और सुधारना, अति आवश्यक है। अभी हाल में ही एक तेजाब हमले के बारे में आरोपी ने कहा कि उसने टेलीविजन सीरियल से देख ये करने का प्रयास किया। ये और भी दुखद है फिल्म और इस तरह के सीरियल देख कर किशोर इस अवस्था में ये अपराध करते हैं, इस पर रोक लगाना चाहिए। कुछ पुनर्वास योजनाएं भी चलाई जा रहीं हैं, पीड़िता मे ये आत्मविश्वास दिलाना अति आवश्यक है कि अभी बहुत कुछ करना बाकी है, शरीर का कुछ भाग ही तो जला है, फिर से खड़ी हो कर पुरूष की कुत्सित मानसिकता पर चोट करो।

ऐसी ही पीड़िता लक्ष्मी को 'International woman of Courage' award दिया गया है।

प्रेम के दर्दनाक रूप के साथ ही साथ प्रेम का एक अलौकिक रूप भी है कि इसी समाज का दूसरा पुरुष चेहरे और शरीर से प्यार नहीं करता बल्कि उसकी आत्मा और आंतरिक खूबसूरती से प्यार कर उससे विवाह कर नया जीवन शुरू कर रहे और समाज को नई दिशा दे रहे। पीड़िता की आंखों की रोशनी और उसकी जिंदगी का हिस्सा बन अपनी आँखों से उसे दुनिया दिखा रहे और प्रेम के शाश्वत रूप को चरितार्थ कर रहे हैं।

दर्दनाक घटनाक्रम को दर्शाती कुछ पंक्तियां

सुन सगाई की खबर उसकी,
सहन ना कर पाया।
हिम्मत ना थी कहने की,
एकतरफा प्यार करता था।
कुंठा से ग्रसित हुआ,
बदला लेने की सोची।
अगर मेरी ना हुई वो,
तो किसी की ना होगी।
टीवी सीरियल से देख,
एसिड अटैक उसने सीखा।
काला कपड़ा बांध कर,
तेजाब चेहरे पर फेंका।
दर्द से कराहती रही वो,
जलन से जलती रही।
आँखो की रोशनी जाती रही,
सर्जरी चलती रही।
चेहरा ऐसा भयानक हुआ,
आईने में देख डरने लगी।
आईने पर पर्दे डाल दिये,
बैठ हालात पर रोती रही।
आँसुओं से जलन होने लगी,
धन भी खत्म होता रहा।
एक डर बैठ गया मन में,
कोई खड़ा है आँगन में।
पहले बहन कहा था,
रिश्ते का विश्वास टूटा क्षण में।
एक इल्तिजा है,
थोड़ा तेजाब उस पर गिराओ।
मौत की सजा थोड़ी है,
जलन का एहसास कराओ।
ये घटना दोबारा ना हो,
ऐसे कड़े कदम उठाओ।
पीड़िता को सम्मान से,
जीने का हक दिलवाओ।

धैर्य की अग्निपरीक्षा से गुजरते आधुनिक दौर के रिश्ते

प्रेम, विवाह और तलाक तीनों ही अपने आप में बहुत बड़े मुद्दे हैं जिन पर अलग अलग विचारधारा वाले व्यक्तियों की अलग अलग राय हो सकती है किन्तु यह शीर्षक इन तीनों को आज के दौर में एक कड़ी में जोड़कर देखने की अपेक्षा करता है।

दीपा जोशी धवन

इस विषय में हर व्यक्ति अपना अलग मत रखता है। और समय के साथ इन तीनों के ही स्वरूप में बदलाव भी आ गया है। यहां सबसे पहले यह समझ लेना आवश्यक है कि यह लेख प्रेम की परिणीति स्वरूप हुए विवाह में उत्पन्न होने वाली तलाक की समस्या पर लिखा गया है। अत: ऐसा बिल्कुल न समझ जाए की यहां किसी अन्य कारण से होने वाले तलाक को गलत सिद्ध करने की कोशिश की गई है। तलाक यदि सही कारण से है तो वह हर विवाहित व्यक्ति का कानूनन हक है और उससे इनकार नहीं किया जा सकता। पहले बात करते हैं अलग अलग दौर में प्रेम और विवाह की। एक जमाना था जब समाज में खुलापन बहुत कम था। यदि किसी के प्रति आकर्षण या प्रेम का भाव हो तो भी वह लोक लाज के भय से मन में ही दबा रह जाता था। विवाह घर के बड़े बुजुर्ग ही तय करते थे। घर से लेकर पात्र तक को देखना और निर्णय लेना उनके ही अनुसार होता था। जो इस बंधन में बंधने जा रहा होता था उससे सलाह मशविरा करने की कोई जरूरत समझी ही नहीं जाती थी।

विवाह के बंधन में बंधने वाले लोगों को भी इसमें कुछ गलत नजर नहीं आता था क्योंकि उनकी नजर में यही जमाने के चलन था। इसमें एक बहुत बड़ा किरदार निभाता था विवाह का बहुत ही कम आयु में हो जाना। विवाह किशोरावस्था में हो जाया करते थे। विवाहोपरांत भी पुरुष अपनी शिक्षा या व्यापारिक प्रशिक्षण को पहले की भांति करते रहते थे और पत्नी परिवार में अन्य सदस्यों के साथ घुलमिल कर रहती थी। उनकी एक दूसरे से अपेक्षाएं बहुत कम थीं। इस बात को यूँ भी कहा जा सकता है कि उम्र इन सब बातों के लिए बहुत कम थी। फिर दौर बदला। महिलाओं में शिक्षा का स्तर बढ़ा। स्त्री पुरुष दोनों में ही विवाह से पूर्व पूर्ण शिक्षित होने या परिवार की जिम्मेदारी उठाने योग्य

होने लायक अपने व्यापार का ज्ञान होने तक विवाह न करने का चलन आया। साथ ही बदला समाज में प्रेम की अभिव्यक्ति का तरीका। इस दौर में अपनी पसंद को उपयुक्त मौका तलाश कर, हिम्मत जुटा दूसरे पक्ष तक स्वयं या किसी और के जरिये पहुंचाने का चलन आया। इस बात को यथासंभव गुप्त रखने का प्रयास होता था। एक और बात खास थी और वो थी प्रेम संबंध को जीवन साथी के स्वयं चुनाव ही के रूप में ही दोनों पक्ष मानकर चलते थे। किसी एक का इससे मुकर जाना धोखा देना माना जाता था। परिवारों की सहमति अक्सर नहीं ही होती थी। ये पूर्ण रूप से निर्भर करता था दोनों पात्रों पर कि वो दबाव के आगे झुक जाएंगे या हिम्मत करके आगे कदम बढ़ा पाएंगे। ये वो दौर था जब अंतर्जातीय विवाह अपने आरंभिक दौर में थे। वो जोड़े जो उस दौर में विवाह संबंध में बंधे, उन्होंने दोनों ही ओर के परिवारों से अपने आरंभिक वैवाहिक जीवन में भेदभाव झेले किन्तु यही उनमें और अधिक नजदीकियां लाने में मददगार साबित हुआ।

फिर आया आज का दौर। शिक्षा का स्तर बढ़ा, संचार के साधन बढ़े, साथ ही बढ़ा समाज में एक खुलापन। प्रेम का स्वरूप भी बदला। किशोरावस्था नें एक दूसरे के प्रति होने वाला आकर्षण ,जो पहले भी मौजूद हुआ करता था, अब प्रेम कहा जाने लगा। इसके साथ जुड़ी एक और बात उभर कर आई। पहले जहां प्रेम की परिणीति विवाह समझी जाती थी, अब ऐसा नहीं रहा। दोनों ही पक्ष एक दूसरे को खुलेआम जोड़े के रूप में पुकारे जाने में हिचकिचाते नहीं और आपस में पटरी न बैठ पाने की स्थिति में स्वेच्छा से अलग होकर आगे का जीवन एक दूसरे से अलग व्यतीत करने जा निर्णय बेहिचक लेने लगे। जहां पहले जीवनसाथी का चुनाव मात्र घर वालों की इच्छा पर निर्भर था, अब केवल पात्रों तक ही सीमित हो कर रह गया

ये तो रही बात प्रेम और विवाह की। अब आता है तलाक का मुद्दा। निश्चित रूप से हमारे समाज में तलाक के प्रतिशत में वृद्धि हुई है। इसके कई कारण हैं।

सबसे पहले दौर में तलाक का प्रचलन ना के बराबर था। लेकिन उस दौर की अपनी परेशानियां थी। कई बार उच्च शिक्षा के लिए घर से दूर रहने वाले पुरुष दूसरा विवाह कर लेते थे। उनकी पहली पत्नी और संतान उनके परिवार के साथ ही जीवन बसर कर लेते थे और वो अपने नए परिवार में मगन हो जाते थे। यानी कि तलाक बिना हुए भी पति पत्नी एक दूसरे से अलग रहते थे।

दूसरे दौर में प्रेम का परिणाम यदि विवाह न हो सका तो दोनों ही पक्ष उसे यथा संभव गुप्त रख अपनी आगे की जिंदगी बसर किया करते थे और यदि विवाह हो पाया तो समाज और परिवार दोनों ही की तरफ से मिलने वाला खिंचाव उनके बीच सेतु का काम करता था। ऐसा नहीं था कि अहम कभी उनके बीच नहीं आया किन्तु उस दौर में

समय के साथ आने वाले बदलाव को समझने के बाद जरूरी है कि निरर्थक बातों को अलग कर सार्थक मुद्दों को प्रयोग में लाया जाए।

जहां तक बात प्रेम की है, वह संसार का सर्वोत्तम भाव है। यदि एक बच्चे का उसकी माँ से प्रेम, भाई बहन का आपसी प्रेम, मित्रों का परस्पर प्रेम भाव अनुकरणीय माना जाता है तो जीवनसाथी के रूप में एक दूसरे को पसंद करने वाले लोगों के बीच इसको गलत कैसे कहा जा सकता है। यदि ऐसा होता तो भगवान कृष्ण और राधा की अमर प्रेम कथा धार्मिक अनुष्ठानों में सुनाई न जाती। रोमियो और जूलियट की कथा अंग्रेजी साहित्य की कक्षा में पढ़ाई न जाती। हीर-राँझा, लैला-मजनूं, शीरी-फरहाद के गीत घर घर न गाये जाते।

विवाह संबंध के टूटने के बाद अपने भविष्य को लेकर एक भय हुआ करता था जो कई बार टकराव की स्थिति में दोनों ही पक्षों को झुकने पर मजबूर कर देता था। तलाकशुदा स्त्री और पुरुष दोनों ही को समाज में अच्छी नजर से नहीं देखा जाता था। पति पत्नी दोनों ही कभी बच्चों का भविष्य, कभी परिवारजन के बारे में विचार कर या कभी अकेले आगे का जीवन काटने में आने वाली परेशानियों के बारे में सोचकर समझौते का रास्ता अपनाते थे।

आधुनिक दौर में स्थिति पूर्ण रूप से बदल चुकी है। अब जमाना भूत और भविष्य के बारे में अधिक सोचने का नहीं रहा। लोग शायद वर्तमान के विषय में अधिक सोचने लगे हैं। समाज का खुलापन जहां एक ओर प्रेम की अभिव्यक्ति में मददगार साबित हुआ वहीं दूसरी ओर विवाहित जिन्दगी में अहम के टकराव में आग में घी डालने का काम करता हुआ लगता है। समझौते की भावना का स्तर दोनों ही पक्षों में निरंतर कम होता जा रहा है।

समय के साथ आने वाले बदलाव को समझने के बाद जरूरी है कि निरर्थक बातों को अलग कर सार्थक मुद्दों को प्रयोग में लाया जाए।

जहां तक बात प्रेम की है, वह संसार का सर्वोत्तम भाव है। यदि एक बच्चे का उसकी माँ से प्रेम, भाई बहन का आपसी प्रेम, मित्रों का परस्पर प्रेम भाव अनुकरणीय माना जाता है तो जीवनसाथी के रूप में एक दूसरे को पसंद करने वाले लोगों के बीच इसको गलत कैसे कहा जा सकता है। यदि ऐसा होता तो भगवान कृष्ण और राधा की अमर प्रेम कथा धार्मिक अनुष्ठानों में सुनाई न जाती। रोमियो और जूलियट की कथा अंग्रेजी साहित्य की कक्षा में पढ़ाई न जाती। हीर-राँझा, लैला-मजनूं, शीरी-फरहाद के गीत घर घर न गाये जाते।

समय भले ही बदल जाये किन्तु प्रेम यदि सच्चा है तो उसका भाव कभी बदल नहीं सकता। आज जब नई पीढ़ी पढ़ लिख कर, आत्मनिर्भर हो कर ही विवाह के बंधन में बंधना चाहती है तो बेहतर है कि जीवनसाथी के चुनाव में सबसे बड़ी भूमिका वह स्वयं ही निभाये। एक दूसरे की पसंद नापसंद को भली भांति समझें।

यदि लगता हो कि वो एक दूसरे के पूरक हो सकते हैं, तभी विवाह के बंधन में बधें, अन्यथा नहीं क्योंकि एक बार गौर करने वाली है कि यदि ये संबंध आगे चलकर टूटने की कगार पर आ खड़े होते हैं तो उसमें मात्र दो ही नहीं ,और लोग भी इस त्रास को झेलते हैं जिसमे बच्चे विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।

संबंधों में किसी भी तनाव, परेशानी के समय में दूसरे के स्थान पर स्वयं को रखकर देखा जाए तो अधिकतर समस्याओं का समाधान हो सकता है।

अंत में इतना ही लिखना काफी होगा कि न तो इसका पता है कि जिन्दगी कब तक है और कब नहीं और न ही इसका कि हमारा आने वाला कल आज से बेहतर होगा या नहीं। तो बिना वजह के मुद्दों से अपने आज के जीवन में कोई भी कमी क्यों रखी जाए। यदि अपने जीवन में अपने लिए ही जीने की सोच के बदले जीवनसाथी की पसंद नापसंद के बारे में सोचना भी शामिल कर लिया जाए तो शायद संबंध और अधिक बेहतर हो जाएंगे।

यदि विवाह का रास्ता अपनाया गया है तो ध्यान रहे हिन्दू विवाह में फेरों के वक्त लिए जाने वाले वचन उपहास मात्र नहीं है। उनमें बहुत गूढ़ भाव छुपे हैं। पति और पत्नी दोनों एक दूसरे के सम्पूरक बताये गए हैं अर्थात एक की कमी को दूसरा पूरा करेगा, ऐसी अपेक्षा की गई है। यही विवाहित जीवन का मूल मंत्र है। मुस्लिम और ईसाई विवाह में भी मौलवी या पादरी शादी के बंधन में बंधने जा रहे पात्रों से उनकी मर्जी पूछ कर ही आगे बढ़ते हैं।

अधिकतर जोड़ों में अहम का टकराव उनको एक दूसरे की कमियां इंगित करवाने में इतना व्यस्त कर देता है कि वो शायद इस बात को भूल ही जाते हैं कि कभी उन्होंने एक दूसरे को अपने लिए स्वयं पसंद किया था। कोई भी रिश्ता समय के साथ अपना स्वरूप बदलता है।

एक व्यक्ति को एक ही समय में अपने अलग अलग रिश्तों को निभाना होता है। जिम्मेदारियों और परिवार के बीच कई बार समयाभाव के कारण भी संबंध तनावपूर्ण हो जाते हैं। आज के दौर में ये तनाव स्त्री और पुरुष दोनों तरफ है क्योंकि अधिकतर दोनों ही कामकाजी होते हैं।

ध्यान रहे कोई भी इंसान सर्वगुण सम्पन्न नहीं होता। हैं ये जरूर है कि प्रत्येक व्यक्ति में अपने अलग गुण होते हैं और अपने अलग दोष। स्त्री और पुरुष दोनों से ही बदलते वक्त के साथ स्वयं की सोच को बदलने की अपेक्षा की जाती है।

प्रेम जुड़ने को कहता है, टूटने को कभी नहीं। यदि हमने किसी को प्रेमपूर्वक अपनाया है तो उससे जुड़े लोगों को भी आदर, प्रेम देना होगा। कई बार जिस आदर की अपेक्षा हमको उनसे है, वो नहीं मिल पाती किन्तु इसमें दोष हमारे जीवनसाथी का नहीं, उस व्यक्ति विशेष का होता है। धैर्य का इसमें बहुत बड़ा योगदान है। अधीरता और अति अपेक्षा संबंधों को खत्म ही करती है। ध्यान रहे जो पुराने संबंधों को निभा नहीं सकता , वो नए संबंधों को भी तभी तक निभा पायेगा , जब तक उनमें ताज़गी है।

ये एक अकाट्य सत्य है कि समय के साथ परिवर्तनशीलता आदिकाल से चली आ रही है।

अफेयर्स

विवाह का अंत, तलाक की शुरुआत

विवेक कुमार हरदहा

समाज के दायरे और उसके बनाए गए नियमों में विवाह को महत्त्वपूर्ण माना जाता रहा है। आज लोगों में विवाह को लेकर मानसिक विकास की जरूरत है। विवाह समाज के दबाव में लेने वाला फैसला नहीं है बल्कि यह फैसला आपसी सहमति से लिया जाना चाहिए। जाति, धर्म से ऊपर उठ कर अपने आने वाले कल की भली-भांति छवि को सोच के लेना चाहिये। हम यहां किसी अंतरजातीय या अंतरधार्मिक विवाह के प्रचारक नहीं है ना ही हम किसी को ऐसा करने से रोक सकते हैं जो उन्हें ये करने का अधिकार संविधान देता है। एक बेहतर विवाहित जीवन की नींव तभी रख दी जाती है जब हम किसी को उसके व्यक्तित्व से स्वीकार करते हैं ना कि उसके धर्म, जाति, समाज या किसी और के दबाव से। विवाह को लेकर मानसिक धारणा बदलना इसलिये भी जरूरी है क्योंकि अक्सर देखा गया है विवाह उपरांत लोगों के जीवन में जब समस्याएं आती हैं तो उसका हल न खोजकर अफेयर्स और तलाक को उसका हल समझ लेते हैं।

आज के रोज मर्रा की जिंदगी में जब भी लोगों को लगता है उनका पार्टनर उन्हें वक्त नहीं देता, उनकी बातों पर ध्यान नहीं देता, अक्सर काम काज में मशरूफ रहता है। ऐसी परिस्थितियों में ज्यादातर देखा गया पार्टनर्स एक्सट्रा मैरिटल अफेयर्स करने लगते हैं। अफेयर्स : विवाह का अंत तलाक की शुरुआत है। माना सुप्रीम कोर्ट द्वारा भारतीय दंड संहिता की धारा 497 को असंवैधानिक बताते हुए निरस्त कर दिया है और इसे निजता का मामला माना है। मगर हम सभी को यह समझना होगा ये दंड नहीं है किंतु इसका प्रभाव व्यक्तिगत जीवन और समाज में बहुत बड़ी छाप छोड़ जाता है। अत: मैरिटल अफेयर्स के प्रति हमें निरंतर सतर्क रहना चाहिए और समझना चाहिए क्या है इसके मुख्य कारण।

रिश्तों का कमजोर होना

आज रिश्तों की डोर प्यार से नहीं अपने कम्फर्ट से चलने लगी है। यही कारण है वक्त नहीं लगता इन रिश्तों को टूटने में। आज जब हम विवाह के लिए अपने जीवनसाथी का चुनाव किसी के दबाव में लेते हैं ऐसे में रिश्तों की नींव ही कमजोर रह जाती है और हमारा साथी इस रिश्ते से बाहर अपनी खुशी खोजने लगता है।

समय नहीं देना

अक्सर देखा गया है विवाह के बाद तो हर कोई अपने जीवनसाथी को वक्त देता है। समय समय पे उसकी पसंद न पसंद को ध्यान देता है । लेकिन कुछ सालों के बाद वो अपने साथी को वक्त देना भूल जाता है यही दूरियां और काम काज में व्यस्त रहना एक्स्ट्रा अफेयर्स को न्यैता देता है। इस समाज में और आपके जीवन में वक्त का महत्व उतना ही है जितना आप उसे सरल बना के बराबर चले।

लोगों का ईगो

आज लोगों की ईगो उस सीमा में पहुंच गयी है जहां वो अपने विवाहित जीवन से जो प्यार से भरपूर होना चाहिए उसे भी ईगो की नजर से देखने लगते हैं। इसी वजह से उन्हें एक-दूसरे की बातें ना सुनाई देती है और ना समझ आती है। आज के युवाओं में एक्स्ट्रा मैरिटल अफेयर्स का मुख्य

कारण यही ईगो है। आज न ही महिला ने ही पुरुष किसी से कम अपनी योग्यता में, मगर एक दम्पत्ति जब इसे अपनी ईगो की नजर से तोलने लगता है तो आपस में भेदभाव आ ही जाता है जो इस रिश्ते को उलझे डोर की तरह कर देता है जिसे वक्त रहते सुलझाना जरूरी है।

इन कारणों के अलावा भी बहुत कारण है एक्स्ट्रा मैरिटल अफेयर्स के जैसे आपका अपने साथी पे बेमतलब शक करना हो, किसी के बातों में आकर अपना संयम खोना हो या फिर अपनी उत्तेजित छोटी सोच में जीना हो। मगर इन बातों के बावजूद हमें ये समझना होगा ये मैरिटल अफेयर्स जहां विवाहित जीवन को ठेस पहुंचाते हैं वहीं इनका समाज में भी दुष्प्रभाव देखा जाता है। कभी-कभी अपने इस अफेयर्स को छुपाने के लिये लोग अक्सर अपराध भी कर बैठते हैं जो समाज के लिये खतरे का संकेत है। जिससे आप सभी को सचेत और सुरक्षित करने के लिए आए दिन कितने सीरियल रोजाना दिखाए जाते हैं।

तलाक की शुरुआत

अफेयर्स का अंत कहीं न कहीं तलाक पे जा के थमता है। तलाक विवाहित जीवन का वो डरावना सपना है जिसे कोई नहीं देखना चाहता। अपनी खुशियों और इच्छाओं के तहत मैरिटल अफेयर्स करने वाला ये भली-भांति समझता रहता है और अनजान बने फिरता है। तलाक के प्रभाव से सिर्फ जीवन साथी नहीं गुजरता बल्कि इसका प्रभाव उन दोनों परिवारों के सदस्यों को भी होता है। तलाक के उपरांत अपना आत्मविश्वास खोना, मानसिक तनाव में चले जाना, स्ट्रेस में आ जाना, खुदकुशी कर लेना आए दिन देखा गया है। वहीं इसका

अपनी खुशियों और इच्छाओं के तहत मैरिटल अफेयर्स करने वाला ये भली-भांति समझता रहता है और अनजान बने फिरता है। तलाक के प्रभाव से सिर्फ जीवन साथी नहीं गुजरता बल्कि इसका प्रभाव उन दोनों परिवारों के सदस्यों को भी होता है।

प्रभाव बच्चों में भी देखा गया जो अपने किसी एक माता या पिता से दूर हो जाते हैं। उनका बचपन ऐसे हालातों से गुजरता है कि उन बच्चों का विवाह, परिवार जैसे शब्दों से भरोसा उठ जाता है। समाजिक रीतियों से उन्हें क्या जब उनके अपने अलग हो उनसे। यहीं बच्चे भविष्य हैं हमारे समाज के अत: विवाह को बस एक प्रथा न रहने दे, उससे ऊपर उठ के सोचिये। विवाह को महज एक प्रथा न समझिये वो कहीं न कहीं आपके आने वाले कल का संकेत है जिसे खूबसूरती से हम सभी को जीना चाहिए।

क्या करें क्या न करें

अपने जीवनसाथी को बराबरी का मौका दीजिये और उसे समझिये। छोटी-छोटी गलतियों को नजर अंदाज न करें मगर उसे एक-दूसरे से बात करके हमेशा तुरंत सुलझाए। आपका साथ जितना खूबसूरत होगा आपके परिवार वालों का भी साथ उतना ही खूबसूरत रहेगा। अपने आने वाले कल और अपने बच्चों के भविष्य को हमेशा ध्यान दीजिए। पुरुष प्रधान सोच से ऊपर उठकर सोचिये। कुछ पल की खुशियों के लिए, अपने हसीन परिवार के साथ व्यतीत किया हुआ सुखमय पल को मत भूलिए।

समाज की सोच बदलनी होगी

विवाह दो लोगों और परिवारों का मेल है। ये सामाजिक प्रथा जरूर है मगर इस प्रथा का पूर्ण अधिकार उन दो लोगों का होता है जो इस विवाहित जीवन को आगे जीता है। अत: आज मेरा समाज और सभी अभिभावकों से निवेदन है कि विवाह को प्रथा या मजबूरी समझ के किसी पे दबाव न डालिये। आपका एक दबाव पूर्ण कदम किसी के आने वाले कल की नींव है। आज के युवाओं को भी ये समझने की जरूरत है विवाह एक महत्वपूर्ण कदम है इसे नादानी या जिद की वजह से न ले। तलाक और अफेयर्स जैसे कृत अगर बढ़ते चले गए तो इस समाज का विवाह जैसे प्रथा से विश्वास ही उठ जायेगा।

एक कल मैंने देखा है,
एक कल तुमने देखा है।
बिना किसी शर्तों के हमने,
हमारा कल मिल के देखा है।।

क्या शादी जरूरी है?

हमारे समाज के अनुसार एक मर्द तथा एक औरत एक-दूसरे की या अपने परिवारों की सहमती या जबरदस्ती से पूरे समाज के सामने, अपने धर्म के अनुसार रस्में-कसमें खाकर एक दूसरे के साथ पूरी जिंदगी बिताने का फैसला करते हैं उसे शादी कहा जाता है। हिंदू धर्म में सात फेरे होते हैं, क्रिश्चियन लोग चर्च जाते हैं, मुसलमानों में मौलवी के सामने कबूल करवाते हैं इत्यादि...।

अक्सर आपने लोगों को शादी करते-कराते हुए देखा होगा। मैं भी कई बार गया हूँ। आप भी गए होंगे, सभी जाते हैं। लेकिन कभी किसी ने ये क्यूँ नहीं सोचा कि आखिर लोग शादी करते क्यूँ हैं। शादी का मतलब होता क्या है, और सबसे अहम बात, क्या ये जरूरी है?

मेरी उम्र भी अब शादी की हो चली है। और मुझसे ज्यादा मेरे माता-पिता उत्सुक हैं इस मामले में, लेकिन पता नहीं क्यूँ मुझे इस बारे में दिलचस्पी जरा कम है। कारण भी बहुत सारे हैं, एक जिससे मेरा रिश्ता होगा उसे तो मैं जनता ही नहीं, पता नहीं आगे क्या हो, दूसरा यह कि अक्सर शादी के कुछ महीनों या कह लो कुछ सालो बाद ही शादी के रिश्ते में कुछ खास नहीं बच जाता, शादी के दिन ही लड़का और लड़की हीरो और हिरोइन होते हैं, बाकी कि सारी फिल्म में वो दोनों ही विलेन की भूमिका निभाते हैं, ऐसा मैंने देखा है। बहुत कम शादियाँ ऐसी हैं जो सच में शादी कहलाने के लायक हैं।

आज तक इस बात का पता नहीं चल पाया है कि मानवता इस धरती पर कब से है, क्या हम सच में पौराणिक कथाओं के अनुसार मनु के वंशज हैं या फिर हम आदिमानव की पीढ़ी जो बन्दर के क्रमिक विकास के कारण अस्तित्व में आई है या फिर दोनों ही या फिर किसी एलियन के द्वारा रोपा गया एक बीज। लेकिन इतना तय है कि किसी सभ्य मानव समाज ने ही शादी नाम के इस रिश्ते को जन्म दिया होगा, क्यूंकि जानवरों में शादी नहीं होती। वहाँ सिर्फ जीवनसाथी होता है, और उनके बीच समझदारी होती है।

हमारे समाज के अनुसार एक मर्द तथा एक औरत एक-दूसरे की या अपने परिवारों की सहमती या जबरदस्ती से पूरे समाज के सामने, अपने धर्म के अनुसार रस्में-कसमें खाकर एक दूसरे के साथ पूरी जिंदगी बिताने का फैसला करते हैं उसे शादी कहा जाता है। हिंदू धर्म में सात फेरे होते हैं, क्रिश्चियन लोग चर्च जाते हैं, मुसलमानों में मौलवी के सामने कबूल करवाते हैं इत्यादि...। लेकिन ये शादियाँ तो सिर्फ बाहरी जगत की शादी है और अब धीरे-धीरे ये चीजें लोगों के लिए शोहरत की बात हो गई है। अब तो जितनी बड़ी शादी उतनी बड़ी इज्जत। शादी खेल बन कर रह गई है। खुशियों का बम सिर्फ बारात में ही फूटता है, मुफ्त की दावतें उड़ाई जाती हैं और वो जो रौनक दिखाई देती है, चंद लम्हों में कहाँ खो जाती है कुछ पता ही नहीं चलता। शादी के बाद दु:ख ही दु:ख हो, ऐसा हर एक के साथ होता है जरूरी नहीं। जिन्दगी में उतार- चढ़ाव तो आते हैं। जो रिश्ते जीवन की कसौटी पर खरे उतरतें हैं वही असली कहलाते हैं, बाकी सब तो सिर्फ शरीरों के बंधन रह जाते हैं।

मेरे लिए शादी रोशनियों से सजा मंडप नहीं बल्कि समझदारी भरा एक कदम है जिंदगी भर के लिए। ये कोई बंधन नहीं बल्कि दो अलग शरीर और मन के बीच का एक महत्वपूर्ण रिश्ता है, जो इस समाज को जिंदा रहने के लिए अगली कड़ी प्रदान करता है। उम्र की विवशता न देखकर इस फैसले को आपसी मेल-मिलाप और अनुभवों से तय किया जाना ज्यादा बेहतर है, ऐसा मुझे लगता है। उदाहरण की बात है, एक मामूली सा मोबाइल अगर किसी को खरीदना हो तो वो दस लोगों से पूछेगा लेकिन शादी जो मेरे हिसाब से समाज का सबसे अहम हिस्सा है, लोग उस पर ध्यान ही नहीं देते। बस औपचारिकता निभा लेते हैं एक लड़के और लड़की को मिलाकर।

ऊपर लिखी सारी बातें यह सिर्फ मेरे विचार और सोच है। इनका सही और गलत होना आपकी सहमती और असहमति पर निर्भर करता है और कुछ नहीं।

राहुल जैन

विवाह एक संस्कार या व्यापार

पिछले साल दुनिया भर में करीब 87,000 महिलाएं मारी गई इनमें करीब 50,000 या सीधे शब्दों में कहें तो 58 प्रतिशत कि मौत उनके करीबी साथी या परिवार के हाथों हुई। इस रिपोर्ट के अनुसार हर घंटे करीब 6 महिलाएं अपने परिचितों के हाथों मारी जाती हैं।

विवाह मानव सभ्यता के प्रारंभ से समाज की एक ऐसी व्यवस्था के रूप में विकसित हुआ जहां एक युवक और युवती को वह जिस भी जाति, धर्म, संप्रदाय से संबंध रखती हो उसी के आधार पर सामाजिक स्वीकार्यता के साथ उनका विवाह करा दिया जाता है। वह लड़की जो विवाह के बाद अपने माता-पिता, भाई-बहन तथा सगे-संबंधियों को छोड़कर एक नए घर में प्रवेश करती है। जिसे न तो वह पहले से जानती है और ना ही कभी उनके बारे में सुना हो। शादी के बाद किसी ऐसे परिवार में जाना कितना कष्टदायक होता होगा शायद जिसकी हम आप कल्पना भी नहीं कर सकते।

मैं पुन: इस बात को दोहरा रहा हूं एक लड़की विवाह उपरांत अपना सर्वस्व त्यागकर किसी नए घर में प्रवेश करती है, तो वह इस सोच के साथ कि उसका परिवार कैसा होगा उस परिवार के सदस्य कैसे होंगे उसके प्रति उनका व्यवहार कैसा होगा। ऐसे कई प्रश्न है जो उसे व्याकुल कर देते होंगे और इस दौरान वह मन ही मन ईश्वर से यह कामना करती है कि किसी भी कारणवश उससे उस परिवार के किसी भी सदस्य को कोई परेशानी न हो। किसी के मन में उसके प्रति असंतोष की भावना ना हो और इसी सोच के साथ वह अपने कर्तव्यों का जिम्मेदारी के साथ निर्वहन करने का प्रयास करती है। लेकिन उस लड़की का ऐसा करने के बाद भी ससुराल पक्ष के लोगों के मन में जिस असंतोष के भाव का सृजन होता है वह उस लड़की के व्यवहार से नहीं बल्कि लड़के की शादी में उनकी मांग के अनुसार दहेज कम मिलना सबसे बड़ा कारण बनता है। और यही असंतोष उस नवविवाहिता लड़की के लिए काल बन जाती है।

यह जानकर हैरानी होगी कि भारत में दहेज रोकथाम के लिए कानून होने के बावजूद महिला हत्या के मामले में सबसे अधिक दहेज हत्या से जुड़े हैं। जिसे आप संयुक्त राष्ट्र कार्यालय द्वारा मादक पदार्थ एवं अपराध (यूएनओडीसी) पर प्रकाशित अनुसंधान के अनुसार पिछले साल दुनिया भर में करीब 87,000 महिलाएं मारी गई इनमें करीब 50,000 या सीधे शब्दों में कहें तो 58 प्रतिशत कि मौत उनके करीबी साथी या परिवार के हाथों हुई। इस रिपोर्ट के अनुसार हर घंटे करीब 6 महिलाएं अपने परिचितों के हाथों मारी जाती हैं। 1995 से 20,013 के आंकड़े के अनुसार भारत में वर्ष 2016 में महिला हत्या दर (2.8) प्रतिशत, जो केन्या (2.6) प्रतिशत, तंजानिया (2.5) प्रतिशत, अजरबैजान (1.8) प्रतिशत, जार्डन(0.8) प्रतिशत और तजाकिस्तान (0.4) से अधिक हैं। इसके अलावा भारत में 15 से 49 वर्ष उम्र की 33.5 महिलाओं ने अपने जीवन में कम से कम एक बार शारीरिक शोषण का शिकार हुई है।

भारत में दहेज से संबंधित मौत के मामले हमेशा से चिंता का विषय बने हुए हैं राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो से प्राप्त एक आंकड़े के अनुसार दहेज से संबंधित हत्या के मामले महिलाओं की हत्या के सभी मामलों के 40-50 प्रतिशत है और इसमे 1999 से 2016 के दौरान कोई परिवर्तन नहीं देखा गया।

इस संबंध में भारत सरकार द्वारा 1961 में कानून लागू करने के बावजूद दहेज की प्रवृत्ति रुकी नहीं है। यह चलन देशभर में जारी है। जो 21वी सदी के भारत के लिए बड़े ही चिंता का विषय है। एक और आंकड़े के अनुसार साल 2012 से 15 के बीच दहेज हत्या के 30,000 से अधिक मामले दर्ज किए गए यह भयावह आंकड़ा है जो भारतीय समाज की विकृति को रेखांकित करता है।

दहेज ने समय के साथ एक ऐसी सामाजिक बुराई का रूप लिया जो करीब-करीब सभी समुदायों मे प्रविष्ट कर गयी। आज यह केवल हिंदू समाज तक सीमित नहीं है। पता नहीं क्यों यह बात मुझे सबसे अधिक पीड़ा देती है कि एक अनुभवहीन लड़की जब किसी पराए घर में प्रवेश करती है तो उसके कुछ दिनों पश्चात् उसे उस

मनोदशा से होकर गुजरना पड़ता है। जिसकी उसने सपने में भी कभी कल्पना नहीं की होगी। जिस समय लड़के पक्ष वालों को हर दृष्टि से इस बात का भरसक प्रयास करना चाहिए कि लड़की को अधिक स्नेह, प्रेम मिलता रहे उसी समय वह लड़की दहेज नामक ससुराल पक्ष वालों की संकीर्ण सोच का शिकार हो जाती है।

मेरी यह दृढ़ मान्यता है कि विवाह पश्चात् लड़की पक्ष वालों को भी इस सोच का त्याग कर देना चाहिए कि अब तो हमने अपनी लड़की की शादी कर दी। उसके हाथ पीले कर दिए तो अब हमारी जिम्मेदारी खत्म जी नहीं शादी के बाद भी आप लड़की के जीवन को उज्ज्वल बनाने में अपना सहयोग करते रहिये। समय-समय पर उसकी जानकारी लेना आवश्यक है। जो आज के आधुनिक युग में बहुत ही आसान हो गया है।

आप सभी से मेरा एक प्रश्न है क्या आपने शादी में दहेज देने वाले उस पिता के बारे में कभी सोचा है, जिसने जीवन भर अपनी बेटी को गुड़िया की तरह सीने से लगा कर रखा हो लाख समस्याएं होने के बावजूद उसकी परवरिश में कोई कमी किए बगैर पाला हो साथ ही उसकी शिक्षा पूरी की हो और फिर उस लड़की की शादी में जब उसी पिता से दहेज की मांग की जाती होगी तो आप समझ सकते हैं। उस समय उस पिता की क्या स्थिति होती होगी। बात ही खत्म नहीं हुई है आगे लड़की पक्ष वालों की दहेज की मांग को पूरा करने के लिए उसी पिता को घर में रखे उस बेटी की मां के गहनों को बेचना पड़ता है। यदि इतने पर भी व्यवस्था नहीं हुई तो आगे जमीन तक बेचना पड़ जाता है।

कितनी पीड़ा होती होगी उस मां को जिसने उसे जन्म दिया उस पिता को जिसने उसका पालन पोषण किया और उस भाई को जो बचपन से लेकर बड़े होने तक साथ रहा होगा।

हमारे समाज की विडंबना देखिए एक पिता अपने जिगर के टुकड़े को शादी, विवाह व निकाह जैसी पवित्र माने जाने वाली परंपरा के अनुसार किसी दूसरे परिवार में देता है, जो उसकी अमूल्य निधि है। और उसके बाद लड़की पक्ष वालों की दहेज जैसी मांग को स्वीकार कर 'येन केन प्रकारेण' पूरा करता है। और यदि उसमें कोई कमी रह जाती है, तो इस स्थिति में उसी लड़कियों को विवाह पश्चात तमाम यातनाएं दी जाती हैं। अंत में उसे मौत के घाट उतार दिया जाता है।

इस समय शायद दुख जैसे शब्द भी हमारी संवेदना को व्यक्त करने के लिए छोटे पड़ जाएंगे बेहतर यही होगा कि इस विषय पर हम सभी को गहनता से विचार करने की आवश्यकता है। समाज में व्याप्त ऐसी बुराई को खत्म करना जो मानवता के खिलाफ सर उठा कर खड़ी हो की जिम्मेवारी हम सभी की है।

मेरा आप सभी से विनम्र निवेदन है। अपनी सामाजिक प्रतिष्ठा दहेज कितना मिला दो लाख, चार लाख या दस लाख जैसी बातों से ने बनाए बल्कि समाज को दहेज न लेकर एक सकारात्मक संदेश दें और इस बात को लोगों को समझाएं कि दहेज लेने से प्रतिष्ठा नहीं बनती।

यदि आप में मानवता है तो दहेज न लेकर समाज को आइना दिखाएं मुझे पूरा विश्वास है, आपके ऐसा करने से समाज में परिवर्तन जरूर आएगा। जिसकी हमारे देश और समाज को बहुत आवश्यकता है।

इसी संदर्भ में आप सभी से त्रेता युग में प्रभु श्री राम चन्द्र जी के विवाह के एक प्रसंग को साझा कर रहा हूं। जिसमें प्रभु श्री रामचंद्र जी के विवाह के पश्चात माता सीता के विदाई के समय विदेह राज जनक जी ने राजा दशरथ से कहा कि बेटियों पर आप कृपा दृष्टि बनाए रखिएगा तथा इनकी अज्ञानता को अपनी दासी समझ कर क्षमा कीजिएगा। इस पर दशरथ जी ने जनक जी से कहाँ आप ऐसा क्यों कह रहे हैं, आपकी बेटियां अयोध्या की महारानी बनकर रहेंगी और उन्होंने कहाँ कि 'आप तो दाता है और मैं याचक' देने वाला लेने वाले से सदैव श्रेष्ठ होता है। इस पर आपकी विनती शोभा नहीं देती।

आप सोच सकते हैं इसी धरती पर ऐसे महान विभूतियों का जन्म हुआ जो वर पक्ष के होने के बावजूद भी उनमे इतनी विनम्रता थी।

यदि हमारा समाज आज हमारी धार्मिक, सांस्कृतिक महत्व की चीजों को अनदेखा न करके उनका थोड़ा भी अनुकरण करता तो आज हमारे समाज की ये स्थिति नहीं होती। इस आधुनिक युग में महिलाओं पर अत्याचार जैसी घटना हमारे समाज के लिए बड़े ही शर्म की बात है।

आकाश तिवारी

सियासत के जिस्म पर मजहबी चौला

साजिश, बवाल और शहादत

नफरत की आग आखिर क्यों लग जाती है। अक्सर लोगों को शिकायत प्रशासन से होती है की वो अपना काम सही से नहीं कर रहा। लेकिन यहां प्रशासन ने बेहतरीन काम किया, फिर भी हुक्मरानों ने उन पर सवालिया निशान लगा दिया। कहीं ऐसा तो नहीं की उनको सियासी फायदा दिखाई दे रहा हो। हुक्मरान जब बेतरतीब बातें करते हैं यकीन मानों तब तब सियासत ओर गंदी होने लगती है।

मो.आरिफ क़ुरैशी

सियासत राजनीति पॉलिटिक्स किस नाम से इस पाजेब की खनखनाहट को पुकारा, क्योंकि जहाँ चलती है बेतुकी, बेदिशा, और बेवजह चलती है। कहीं सिंदूर लूट लेती है, कहीं गोद उजाड़ देती है, हंसते-खेलते रोशन घरौंदों में अंधेरा छोड़ जाती है। ये वो मर्ज है जिसका इलाज शायद अभी बना ही नहीं है। क्योंकि कुछ दिन पहले बुलंदशहर के चिंरावठी में जो कुछ भी देखने को मिला है वो इस बात को सही साबित करता दिखाई दे रहा है कि सियासत जब मजहबी चौला पहन लेती है तो वो जानलेवा हो जाती है। चिंगरावठी पिछले दिनों में क्यों फूट-फूट कर रोया इससे हर कोई वाकिफ है, क्यों मजहब की आंधी ने इंसानियत को खतरे में लाकर खड़ा कर दिया ये भी किसी से छुपा नहीं है। कुछ लोगों को शिकायत थी कि गांव के पास गौ हत्या की जा रही है उसकी शिकायत लेकर ही भीड़ बेकाबू हो गयी थी। हालांकि कुछ लोगों का मानना ये भी है कि ये एक ऐसी सियासत थी जिससे माहौल को खराब करने की कोशिश की जा रही वो भी ऐसे वक्त जब चिंगरावठी से तकरीबन 30 किलोमीटर दूर एक समुदाय का प्रोग्राम चल रहा था। लेकिन सवाल ये है कि आखिर सुबोध सिंह जो कि इंस्पेक्टर थे और सुमित की जान क्यों गयी, पुलिस स्टेशन क्यों जला, रास्ता क्यों सील हुआ, सिंदूर क्यों लूटा, एक माँ की गोद क्यों उजड़ी, ये वो सवाल है जिसका जवाब शायद वक्त ही दे सकता है। गाय को माता का दर्जा दिया गया है इससे किसी को कोई ऐतराज नहीं होना चाहिए, ना ही किसी की भावनाओं के साथ किसी को खेलने का अधिकार है ये लोगों को समझना होगा कि अगर सामने वालों के एहसासों और भावनाओं को अगर समझना छोड़ दिया तो फिर सियासत को मजहबी रंग लेने से कोई नहीं रोक सकता। सुबोध सिंह जैसे अफसरों की बदौलत ही ये देश चल रहा है, सलाम है ऐसे अफसरों को जो अपनी जान की बाजी लगाते है, सुबोध सिंह ने जिस समझ बूझ के साथ मामले को सम्भला वो काबिल-ए-तारीफ है। सुबोध सिंह को 100 सलाम जिसने अपनी जान देकर ना जाने कितनी माओं की गोद उजड़ने से बचा ली। मुझे सहानभूति सुमित के परिवार से भी जिसने अपने बेटे खो दिया। लेकिन जिस तरह से इस मामले को सियासी रंग देकर मजहबी चौला पहनाने की कोशिश की गई है वो देश के लिए दुर्भायपूर्ण है। चिंगरावठी को इससे पहले तक शायद कोई जानता भी नहीं होगा अब चिंगरावठी चाय की चर्चाओं से लेकर मीडिया की सुर्खियां तक में बना हुआ है। पत्थरबाजी, आगजनी, डंडे, यहां तक कि गोली भी चली। एक देश के जवान को गोली मारने और दंगाइयों का साथ देने के इल्जाम में गिरफ्तार भी किया गया है। एक नाम बजरंग दल से है जो आम लोगों की लिस्ट से निकल कर मीडिया की सुर्खियों में पहुंच गया। गाय के नाम आजकल जितना माहौल खराब हो रहा है उतना कभी पहले देखने को नहीं मिला, यहाँ भी वजह सिर्फ ये ही थी। ये पूरा कांड सियासत का गंदा खेल था है कुछ और इस बात की सच्चाई जांच पूरी होने के बाद सामने आ जाएगी। लेकिन जिस तरह से शहीद सुबोध सिंह के घरवालों ने आरोप लगाए है उसको देखते हुए साजिश की बू ज्यादा आने लगती है। सुबोध सिंह की बहन साफ तौर पर इस बात को कहा कि दादरी कांड में जांच कर रहे उनके भाई को निशाना बनाया गया है। इससे पहले शहीद सुबोध अखलाक कांड की जांच कर रहे थे जिसकी वजह से उनको धमकियां भी मिल रही थी, उनकी पत्नी ने ये भी कहा कि 8-8 दिन तक उनका परिवार घर से बाहर नहीं निकलता था। उनकी हत्या के आरोप में। फौजी को गिरफ्तार करके 14 दिन की न्यायिक हिरासत में भेज दिया गया है। फौजी को

जम्मू कश्मीर से गिरफ्तार किया गया था। लेकिन सोचने वाली बात है कि जब-जब सियासत आने पांव पसारने की कोशिश करती है तब-तब घरों में नफरत की आग आखिर क्यों लग जाती है। अक्सर लोगों को शिकायत प्रशासन से होती है की वो अपना काम सही से नहीं कर रहा। लेकिन यहां प्रशासन ने बेहतरीन काम किया, फिर भी हुक्मरानों ने उन पर सवालिया निशान लगा दिया। कहीं ऐसा तो नहीं की उनको सियासी फायदा दिखाई दे रहा हो। हुक्मरान जब बेतरतीब बातें करते हैं यकीन मानों तब तब सियासत ओर गंदी होने लगती है। सुबोध सिंह जिसमें अपने फर्ज के लिए अपनी जान दे दी उनको भी सियासत के रहनुमाओं ने नहीं छोड़ा उन्हें गलत साबित करने की पूरी कोशिश की गई लेकिन ऐसा हो न सका।

अब आखिर में एक ओर सवाल सामने लाना चाहता हूँ हिन्दू-मुसलमान धर्म जात का ये गंदा खेल जो चिंगरावठी में खेला जा रहा था वो आखिर कब-तक खेला जाएगा क्या हिंदुस्तान सिर्फ इन्हीं बातों में उलझ कर रह जाएगा या फिर उससे आगे भी सोचा जाएगा। अब जरूरत है कि इन सब चीजों से निकल कर विकास और तरक्की के बारे में सोचा जाए। और अगर ऐसा ना हुआ तो ना जाने कितने चिंगरावठी हमारे सामने बन जाएंगे। आज जिस युवा को देश की मजबूती के बारें में सोचना चाहिए वो युवा भटका हुआ सा नजर आ रहा है, उसे इस सियासत ने मजहब रूपी चौला पहनकर उसकी आँखों पर पट्टी बांध दी है और ऐसा ज्यादातर चिंगरावठी जैसे छोटे गांव और कस्बों में दिखाई दे रहा था जिससे नफरत की आग ज्यादा फैलती दिखाई दे रही है। पिछले कुछ वक्त से जी तरह की सियासत देखने को मिल रही है वो लोकतंत्र के लिए खतरा बन रही है। हालांकि सिक्के का दूसरा पहलू ये भी है शहरों में रहने वाले युवा इस गंदी सोच का हिस्सा नहीं है उनकी सोच अलग है क्योंकि शायद वो मजहब से ऊपर उठकर इंसानियत को ज्यादा मानते हैं। यहां देश के सभी युवाओं को ये समझने की जरूरत है कि आखिर उनकी दिशा क्या होनी चाहिए।

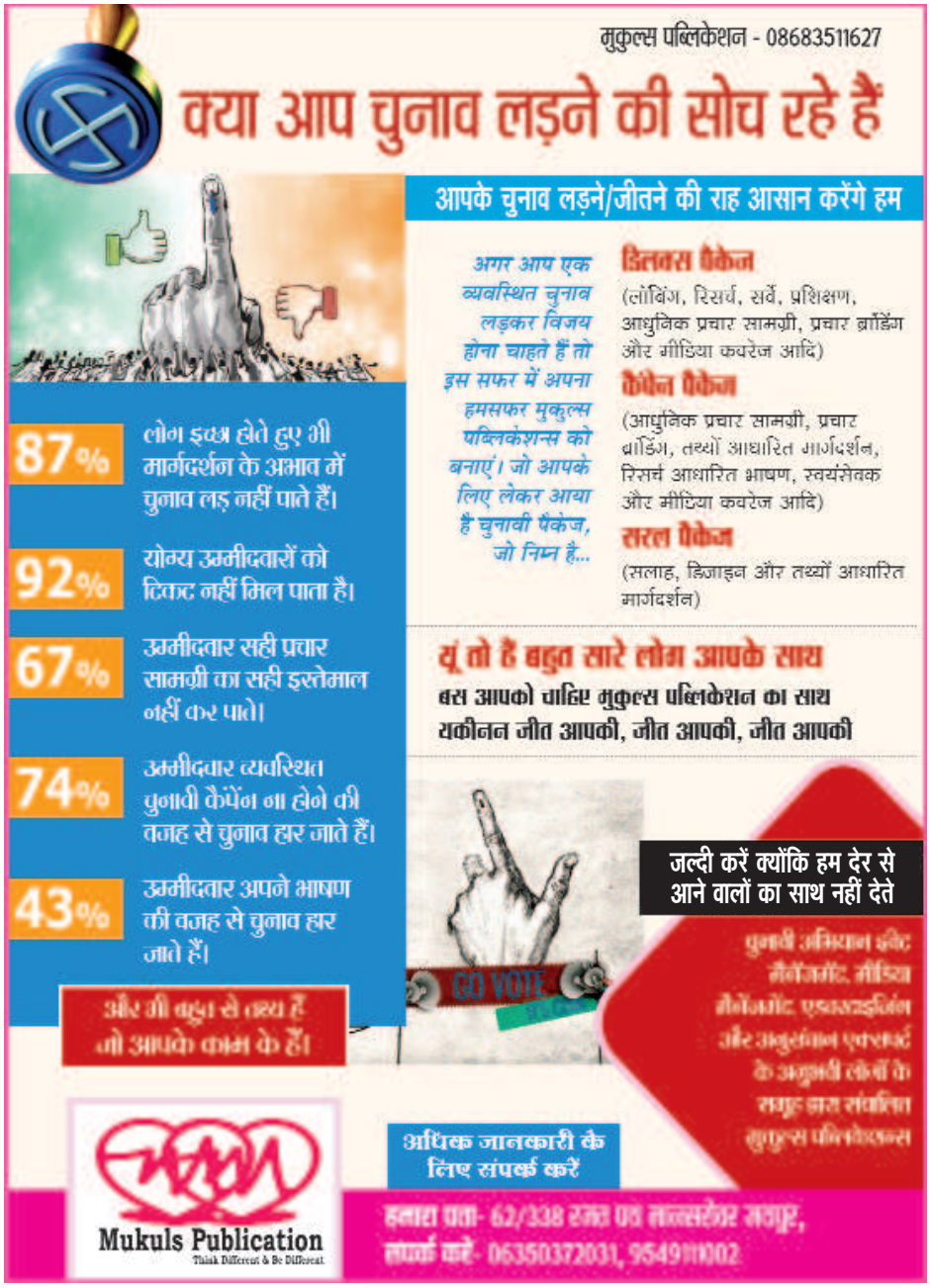

आपको नई पहचान दिलाने के लिए पञ्चदूत आ रहा है आपके शहर में सामाजिक मञ्च / SOCIAL STAGE कार्यक्रम लेकर, जहां सामाजिक मुद्दों पर कविताएं/गीत/गजल आदि लिखने वाले युवाओं को मौका मिलेगा एक बड़े मंच पर प्रस्तुति देने का। कार्यक्रम में भाग लेने के लिए अपनी प्रस्तुति का 30 सेकेंड का ट्रेलर वीडियो magazine@panchdoot.com पर आधार कार्ड की कॉपी के साथ ई-मेल करें।

नोट : आपके शहर/गांव से उपयुक्त संख्या होने पर ही कार्यक्रम का आयोजन किया जाएगा।

अधिक जानकारी के लिए
www.panchdoot.com को विजिट करें।

ढाई आखर प्रेम का

महिलाओं की अपेक्षा पुरुषों के एक्स्ट्रामेरिटल अफेयर्स अधिक होते हैं, जहां महिलाओं की संख्या 12 प्रतिशत है वहीं पुरूषों की संख्या 28 प्रतिशत पाई गई हैं।

पोथी पढ़ पढ़ जग मुआ,
पंडित भया न कोय
ढाई आखर प्रेम का,
पढ़े सो पंडित होय

नीतू शर्मा

आजकल का प्यार प्रेक्टिकल है भाई

कबीर का एक यह बहुत ही सुन्दर और लोकप्रिय दोहा है। बहुत गहरा ज्ञान है इस दोहे के पीछे। जिसने प्रेम का स्वाद चख लिया उसे कुछ और नहीं चाहिए होता। वो अपने आप में पूर्ण हो जाता हैं। प्यार जिंदगी का सबसे खुबसूरत अहसास है। रोमियो-जुलियट, हीर-रांझा, शिरी-फरियाद, लैला-मजनू इतिहास की और देखें तो कई सारे उदाहरण हमें मिल जाएंगे। एक उदाहरण हमारे सामने भगवान कृष्ण और राधा का है, जिनका प्यार न अधूरा और न ही पूरा। इसलिए तो कबीर ने प्यार का पहला अक्षर ही अधूरा बताया है। प्यार असीम है अनंत है। जिसको मिल जाता है वो किसी खुशनसीब से कम नहीं होता, और जिसे नहीं मिलता वो सब-कुछ होते हुए भी अधूरा रह जाता है। हमारे आस-पास ऐसे कितने किस्से है, कितनी ही कहानियां और कितनी ही हकीकत। जिसमें प्यार के अलग-अलग मायने हैं। एक वो जमाना था जब प्यार करना किसी गुनाह से कम न था। प्यार के लिए भी पांबद थे। प्यार भी किसी ऐसे से करना होता था जो किसी और की पंसद हो। हमारी अपनी नहीं। और कोई पंसद होता भी था तो उसके लिए या तो बागी बनो या फिर भी उस प्यार को अंदर ही मार दो। वो प्यार का जमाना भी बहुत अलग था। सौ झूठ बोल कर प्रेमी से मिलने जाना। तब सोशल मीडिया नहीं था। बस प्यार होता था। प्रेम-पत्रों का आदान-प्रदान किया जाता था। तब प्रेमी दिल से एक-दूसरे से जुड़े रहते थे। भरोसे का एक उदाहरण था वो दौर। किताबों में अपने प्रेमी की तस्वीर छिपा कर रखना। फिर जमाना आया फोन का। पड़ौसियों के फोन पर सहेली का बहाना कर के बात करना। ये प्रेम जीना सिखाता है तो दुनिया से लड़ जाना भी ये प्रेम ही आपको सिखाता हैं। कितने सारे रूप है इस प्यार के लेकिन क्या इस अहसास की खूबसूरती अब भी बरकरार है। समय के साथ बहुत कुछ बदल गया और बदल गया ये प्यार भी। अब ये भी दिल से नहीं दिमाग से होने लगा है।

आप दौलत के तराजू में दिलों को तौलें
हम मोहब्बत से मोहब्बत का सिला देते है....

साहिर लुधियानवी का ये शेर आज के प्रेम के लिए सटीक बैठता हैं। आजकल प्यार दिल से नहीं दिमाग से होता हैं। पहले सिर्फ दिल ही देखा जाता था और अब शक्ल, सूरत, पैसा, स्टेट्स ये सब देखकर प्यार होता हैं। सीरत तो बाद में आती हैं। पहले ताउम्र मोहब्बत को दिल में रखा जाता था, आज चंद पलों में हमसफर बदल जाते हैं। ये ढाई आखर प्रेम का न जाने लोग कितनी बार पढ़ जाते हैं। आखिर क्यों हो गया है ऐसा कि प्यार, प्यार नहीं रह कर महज एक खेल बन गया हैं। शायद पहले अहम प्यार के बीच में नहीं आता था, पर अब इसकी जगह सबसे ऊपर है। पहले प्यार शादी तक इसलिए नहीं पहुंच पाता था क्योंकि जात-पात, समाज के नियम-कानून बीच में आते थे। आज प्यार इसलिए मुकम्मल नहीं होता क्योंकि पैसा बीच में आ जाता है। कई किस्से है ऐसे। हाल ही में मेरे ही एक दोस्त को प्यार है एक लड़की से। लेकिन लड़की उससे प्यार नहीं करती, उसके लिए वो अहसास है पर प्यार नहीं। उसकी वजह भी मैं आपको बता दूं कि वो लड़का गांव का रहने वाला है। ग्रामीण परिवेश में उसका परिवार है। पैसे की बात करूं तो वो भी सीमित। अब बताते है लड़की के बारे में वो खुद भी मध्यम वर्गीय परिवार से है। इसलिए वो प्यार नहीं करती क्योंकि उस फिर से मध्यम परिवार में नहीं जाना है शादी करके। जहां उसे अपने सपनों का पूरा करने के लिए सोचना पड़ेगा। खुद के सपनों को पूरा करने के लिए मेहनत नहीं करनी पड़े। अब क्या कहें इसे-स्वार्थ। सही शब्द है लेकिन इसके मायने दूसरे है। वो क्या कहते है अग्रेंजी में - जी हां प्रेक्टिकल होना। प्यार में पूरी तरह सुरक्षा मतलब आर्थिक रूप से सुरक्षा आज के प्यार के पहली शर्त हैं। दिल चाहें पहले जैसे ही धड़कता हो लेकिन अब प्रेम मे समर्पण और झुकने के बजाय बराबरी,स्वच्छंदता और गिव एडं टेक की नीति ने घुसपैठ कर ली है।

बढ़ रहे है लव-अफेयर

इस प्रेक्टिकल युग में लोग खुद को काफी समझदार समझते है। लेकिन सच्चाई तो ये ही है कि प्यार एक संपूर्ण अहसास हैं। बिना इसके हर इंसान अधूरा हैं। शायद ये ही वजह है लोगों को पास सब है पर अकेलापन और प्यार का अभाव दोनों जीवन में मौजूद है। इसलिए इंसान प्यार की तरफ भागता है। फिर वो सही-गलत नहीं देखता है। आज के दौर में कितने ऐसे किस्से हमारे सामने होते हैं के प्यार के लिए लोग किसी की हत्या भी कर देते हैं। लव-अफेयर्स बढ़ने का एक कारण ये भी है कि अकेलापन। पैसे से आप सब खरीद सकते हो। पर प्यार के लिए तो आपको दिल ही लगाना पड़ता है। आपसी समझ की कमी के कारण भी हम एक-दूसरे से दूर हो जाते हैं। आज के इस दौर में एक-दूसरे से आगे निकलने की होड़ है। एक-दूसरे का हाथ थाम के आगे चलना बहुत पीछे रह गया। एक और किस्सा आपसे साझा करती हूं। बचपन से साथ रहने वाले दो दोस्त मोहित और संजना जो कि प्रेमी बने और फिर पति-पत्नी बनें। लेकिन प्यार की जगह ले ली करियर, पैसे ने और प्यार उड़न छू हो गया। इसी कश्मकश में मोहित को मिला एक और दौस्त का साथ जिसने उसे समझा, उसके साथ हर परिस्थिति का सामना किया और इसी वजह से ये दोस्ती भी प्यार में बदली। आज वो दोनों साथ है, उन्होंने शादी की और अपना परिवार बनाया। अब वो खुश हैं। अब आप ही अंदाजा लगाइये कि ऐसा क्यों हुआ? बचपन के प्यार पर कुछ सालों का प्यार कैसे भारी पड़ गया। करियर और पैसा इस प्यार में भी था लेकिन एक-दूसरे के फैसलों के सम्मान के साथ। इस प्यार में हर मसले पर विचार एक-दूसरे की समझ और राय किया जाता है। इसमें किसी को किसी से आगे नहीं जाना बस एक-दूसरे क साथ रहकर आगे बढ़ना है। कहीं ना कहीं हमने इस प्यार का मजाक बना दिया इसलिए तो कितने लोग मजाक बन कर रह गए। प्यार को वक्त और इज्जत दोनों चाहिए। जिसने दोनों बातों का ख्याल किया वो आगे निकल गया बाकी सब दौड़ मे लग गए।

एक्स्ट्रा मेरिटल अफेयर्स का दौर

एक्स्ट्रा मेरिटल अफेयर्स का दौर चल रहा है आजकल। सोशल मीडिया ने भी बहुत महत्वपूर्ण रोल अदा किया है इसमें। आजकल प्यार ऑन लाइन भी हो जाता हैं। लेकिन इसका अंजाम तो निर्भर करता हैं कि उनके मायनों में। कई लोग सिर्फ हवस को प्यार का माध्यम मानते हैं। आजकल ऑन-लाइन प्यार में ये ही मुददा अहम हो गया हैं। एक्स्ट्रा मेरिटल अफेयर्स करने वाले लोग फेसबुक पर अपना एक फेक अकाउंट बनाते हैं। स्टेटस सिंगल अपडेट करते है और फिर चेटिंग शुरू करते हैं। इस सबकी वजह शारीरिक आकर्षण भी है। एक रिसर्च में सामने आया कि ऐसे अफेयर

आंकड़ों के अनुसार

- **महिलाओं** की अपेक्षा पुरुषों के एक्स्ट्रामेरिटल अफेयर्स अधिक होते हैं, जहां महिलाओं की संख्या 12प्रतिशत है वहीं पुरूषों की संख्या 28 प्रतिशत पाई गई है। एक्स्ट्रामेरिटल अफेयर्स में सेक्स के लिए पुरुष ही नहीं महिलाएं भी नहीं हिचकिचाती।
- **नपुंसकता** के चलते भी एक्स्ट्रामेरिटल अफेयर्स बढ़ रहे हैं।
- **स्ट्रेस** कम करने के लिए भी होते है एक्स्ट्रामेरिटल अफेयर्स
- **रिसर्च** के अनुसार, ऐसी महिलाएं जिनके पति कई महीनों तक या सालों तक उनसे दूर रहते हैं वो एक्स्ट्रामेरिटल अफेयर्स की ओर जल्दी आकर्षित होती हैं।

ज्यादातर बच्चे होने के बाद में होते हैं। बच्चे होंने के बाद में पर्याप्त समय नहीं मिल पाने के कारण ऐसे अफेयर्स की संभावना होती है। कई बार ऐसे अफेयर्स लग्जरी लाइफ पाने के कारण भी हो जाते हैं। अपने शौक को पूरा करने के लिए जब कोई मिल जाता है तब भी ऐसे अफेयर्स हो जाते हैं। मुंबई के फैमिली कोर्ट के काउंसिल के अनुसार 20 से 30 फीसदी मामलों में एक्स्ट्रा मेरिटल अफेयर्स का कारण इंपोटेंस यानी नपुंसकता होती हैं। नपुंसकता आने की वजह से महिलाएं दूसरे आदमियों की तरफ आकर्षित होती है और आगे चलकर पति को तलाक दे देती हैं। राज्यों में एक्स्ट्रा मेरिटल अफेयर्स के मामलों में केरल सबसे और शहरों में मुंबई सबसे ज्यादा आगे हैं। इसके पीछे एक कारण कल्चर गैप भी है।

कमजोर होते रिश्ते

कुछ साल पहले प्यार की परिभाषा बहुत अलग थी। जब भी कोई प्यार में छोड़ कर जाने की बात करता था, उसका रो-रो कर बुरा हाल हो जाया करता था। यहां तक की लोग आत्महत्या तक कर लेते थे। लेकिन अब साफगोई के रिश्ते हैं। अब रिश्तों में जकड़न नहीं है। अब प्यार में खुलापन आ गया है। अब रिश्तों में बराबरी की बात होती है। प्यार एक मीठा सा अहसास हैं। प्यार में बराबरी और सम्मान का एहसास महत्वपूर्ण होता हैं। आजकल लड़कियां आर्थिक रूप से सक्षम होती हैं। इसलिए वे खुद के लिए भी समर्पण चाहती हैं। अब वो जमाना नहीं रहा जब हर फैसला लड़का ही करता था। आज ये आजादी लड़कियों को भी है। इसलिए पहले से ज्यादा साफगोई है प्यार के इस रिश्ते में। आज के इस बदलते परिवेश में आत्म-निर्भरता ने इन सब बातों को दरकिनार कर दिया हैं। आज कल लड़का हो या लड़की अपना पक्ष में रखने में पीछे नहीं हटते ना ही वो किसी तरह का झुकाव पंसद करते हैं। रिश्तो की डोर कमजोर हो गई है। जिस टूटने में पलभर का समय भी नहीं लगता। इसकी सबसे बड़ी वजह है प्यार में कमी।

ना आने दे ऐसी नौबत

एक हाथ से ताली कभी नहीं बजती है। इन अफेयर्स के लिए पति-पत्नी या फिर दो प्यार करने वाले कपल दोनों ही जिम्मेदार होते हैं। एक दूसरे को समझ कर एक दूसरे की भावनाओं केी कद्र करना बहुत जरूरी होता है। जब तक आप एक दूसरे की भावनाओं को सम्मान नहीं देंगे तब तक आप उस रिश्ते की गरिमा को नहीं समझ सकते हैं। वो कहते है ना एक रिश्ता बनाने और निभाने में फर्क होता हैं। बना तो कोई भी लेता है लेकिन अंत तक निभाना हर किसी के बस की बात नहीं होती। प्यार में बस प्यार को रहने दीजिए उसमें किसी तीसरे का सवार मत होने दीजिए। दो कश्तियों में सवार होने से कश्ती डूबती ही है। अपने रिश्ते को समय दीजिए, प्यार दीजिए, विश्वास करिये और बस उसे मजबूत बनाइये ताकि कोई तोड़ ना सके।

2018 कुछ यूं गुजरा ये साल...

साल 2018 में दुनिया ने कई बड़े बदलाव देखें और कई नई चीजों की शुरुआत का गवाह भी बना। अब यह साल हमसे विदा लेने जा रहा है लेकिन इस साल को कई वजहों से हमेशा याद भी रखा जाएगा एक नजर भारत और दुनिया में घटी बड़ी घटनाओं पर जिसने खूब सुर्खियां बटोरी।

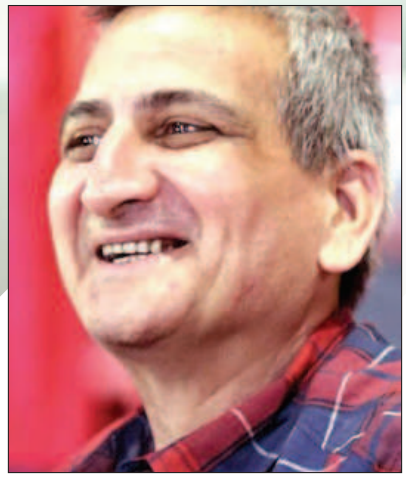

2018 के सबसे बड़े दंगे

2 जनवरी 2018

उत्तर प्रदेश के कासगंज में गणतंत्र दिवस के मौके पर निकाली जा रही तिरंगा यात्रा के दौरान हुई एक झड़प ने साम्प्रदायिक हिंसा का रूप ले लिया था। हिंसा में चंदन गुप्ता नाम के एक युवक की गोली लगने से मौत हो गई थी। इस घटना के बाद अफवाहों का बाजार खूब गर्म रहा था।

3 दिसंबर 2018

उत्तर प्रदेश के बुलंदशहर के स्याना में गौ मांस के नाम पर फैली हिंसा ने एक पुलिस अधिकारी और एक अन्य शख्स की जान ली। यह हिंसा भी साम्प्रदायिक रंग लेने से बच नहीं पाई। जिससे लेकर सोशल मीडिया पर झूठी अफवाएं फैलाई गई।

चर्चित अपराध

- कठुआ कांड
- मंदसौर रेप
- उन्नाव कांड
- बुराड़ी कांड
- केरल नन रेप केस
- शेल्टर हाउस केस

प्रमुख विवाद

- राम मंदिर विवाद
- विराट कोहली की पत्नी अनुष्का शर्मा और शिखर धवन की पत्नी आयिशा धवन का विवाद
- केरल के सबरीमाला मंदिर में औरतों के प्रवेश पर फैसला आ चुका है। अब हर उम्र की महिलाएं मंदिर में प्रवेश कर सकती हैं। लोगों ने इसका जमकर विरोध किया जिस कारण अभी तक कोई भी महिला मंदिर में प्रवेश नहीं कर पाई।
- नवजोत सिंह सिद्धू का पाकिस्तान जाना और खालिस्तानी गोपाल चावला के साथ तस्वीर सोशल मीडिया पर वायरल होना।
- 28 मार्च 2018 को बॉल टेंपरिंग मामले में फंसे ऑस्ट्रेलियाई क्रिकेटरों को क्रिकेट ऑस्ट्रेलिया ने एक साल के लिए बैन कर दिया था।
- पूर्व राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी का संघ कार्यक्रम में हिस्सा लेना।
- फेसबुक डाटा लीक मामला
- महिला टी-20 विश्व कप में इंग्लैंड से हार के बाद मिताली राज को टीम में शामिल न करने पर विवाद गहराया। इसके बाद टीम कोच रमेश पोवार भी निशाने पर आए।

बिजनेस में विवाद

- पेटीएम फाउंडर विजय शेखर शर्मा से 30 करोड़ रुपये फिरौती मांगने के आरोप में गिरफ्तार हुई उनकी सेक्रेटरी और वाइस प्रेजिडेंट सोनिया धवन।
- दैनिक भास्कर के वरिष्ठ पत्रकार कल्पेश याग्निक को झूठे मामले में फंसाने की धमकी देकर उन्हें कथित तौर पर खुदकुशी के लिए उकसाने वाली पूर्व सहकर्मी सलोनी अरोरा का चर्चित मामला।
- फ्लिपकार्ट-वॉलमार्ट विवाद

चर्चित फिल्में

- 2.0
- संजू
- पद्मावत

चर्चित शादी

- सोनम कपूर – आनंद आहूजा
- दीपिका पादुकोण – रणवीर सिंह
- प्रियंका चोपड़ा – निक जोनस
- ईशा अंबानी – आनंद पीरामल
- कपिल शर्मा – गिन्नी
- नेहा धूपिया – आगंद बेदी
- हिमेश रेशमिया – सोनल चौहान
- दीपिका कक्कड़ – शोएब इब्राहिम
- मिलिंद सोमन – अंकिता कंवर
- प्रिंस नरूला – युविका चौधरी
- प्रिंस हेनरी – मेगल मार्कल
- राहुल महाजन की शादी

सबसे ज्यादा सोशल मीडिया पर सर्च किए गए

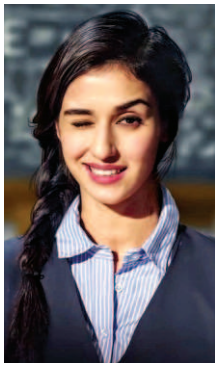

- प्रिया प्रकाश
- डब्बू अंकल
- राहुल गांधी
- पीएम मोदी
- दीपिका पादुकोण
- सलमान खान
- आमिर खान
- अमिताभ बच्चन
- पीएमओ इंडिया
- विराट कोहली
- शाहरूख खान

चर्चित वीडियो और तस्वीरें

- कीकी चैलेंज
- जमोटो
- डोनाल्ड ट्रंप टॉयलेट ब्रश
- तैमूर डॉल

सुप्रीम कोर्ट के ऐतिहासिक फैसले

2018 देश की न्यायायिक व्यवस्था के लिए बेहद महत्वपूर्ण रहा। यह साल सुप्रीम कोर्ट की तरफ से लिए गए कई लंबित मामलों पर कड़े और ऐतिहासिक फैसलों के लिए याद किया जाएगा। जो कि इस प्रकार है-

दिल्ली विवाद

दिल्ली सरकार बनाम एलजी मामले में सुप्रीम कोर्ट ने 4 जुलाई को फैसला सुनाया। सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि एलजी की मनमानी नहीं चलेगी और हर मामले में फैसले से पहले एलजी की सहमति की जरूरत नहीं। सुप्रीम कोर्ट ने अपने फैसले में साफ कर दिया कि दिल्ली के असली बॉस एलजी नहीं, बल्कि दिल्ली सरकार ही है।

बाबरी मस्जिद विध्वंस मामला

यह मामला अभी कोर्ट में जिसपर जल्द फैसला आना है।

आधार वैध

आधार कार्ड की अनिवार्यता पर सुप्रीम कोर्ट ने 26 सितंबर को फैसला सुनाया और कुछ शर्तों के साथ आधार को वैध करार दिया।

व्यभिचार कानून हुआ खत्म

सुप्रीम कोर्ट ने साल 2017 के अंत में एक याचिका सुनवाई के लिए स्वीकार कर लिया, जिसमें एडल्टरी यानी व्यभिचार से जुड़े विवादित कानून की सुनवाई हुई। 27 सितंबर को व्यभिचार के लिए दंड का प्रावधान करने वाली धारा को सर्वसम्मति से असंवैधानिक घोषित किया था।

समलैंगिकता अपराध नहीं

सुप्रीम कोर्ट ने 6 सितंबर को एक बड़ा फैसला सुनाते हुए कहा कि समलैंगिकता अपराध नहीं है।

कावेरी जल विवाद

कावेरी जल विवाद मामले में सुप्रीम कोर्ट ने 15 फरवरी को अहम फैसला सुनाया। कोर्ट ने कहा कि नदी के पानी पर किसी भी स्टेट का मालिकाना हक नहीं है।

बड़े फैसले

- मराठा आरक्षण को मजूंरी
- करतापुरा कॉरिडोर
- भारतीय खिलाड़ी गौतम गंभीर का क्रिकेट से सन्यास
- आयुष्मान भारत योजना

2018 की सबसे बड़ी सुर्खियां

- भारत में #MeToo कैंपेन का शुरू होना।
- यौन उत्पीडन मामले में बीजेपी मंत्री एमजे अकबर का इस्तीफा
- स्टैच्यू ऑफ यूनिटी का अनावरण।
- आरबीआई गर्वनर उर्जित पटेल का इस्तीफा।
- सीबीआई विवाद।
- नीरव मोदी घोटालाकांड।
- इस साल सुप्रीम कोर्ट के प्रधान न्यायाधीश दीपक मिश्र कार्यकाल पूरा हुआ। उनकी जगह अब नए सीजेआई रंजन गोगोई हैं।
- पूर्व कसान महेंद्र सिंह धोनी को पद्मभूषण से नवाजा जाना।
- तेजप्रताप यादव और ऐश्वर्या का तलाक मामला।
- आंध्रप्रदेश को विशेष राज्य का दर्जा देने की मांग।
- राफेल सौदा।
- किसान आंदोलन
- मुक्केबाज एमसी मैरीकॉम ने विश्व बॉक्सिंग चैंपियनशिप जीतना।
- विधानसभा चुनावों में कांग्रेस की जीत
- 12 साल से कम उम्र की मासूमों से रेप पर फांसी की सजा।
- रूपये का कमजोर पड़ना
- पेट्रोल के दाम बढ़ना
- एक्टर इरफान खान को न्यूरोएंडोक्राइन ट्यूमर होना।
- जम्मू कश्मीर में सरकार गिरना।
- इलाहाबाद का नाम बदलकर प्रयागराज।
- केरल बाढ़।

इन हस्तियों ने कहा अलविदा

- 24 फरवरी 2018 को दुबई के एक होटल में डूबने से एक्ट्रेस श्रीदेवी की मौत हो गई थी।
- 16 अगस्त 2018 को देश के पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी ने दिल्ली के एम्स में अंतिम सांसे ली।
- 1 दिसंबर 2018 पूर्व अमेरिकी राष्ट्रपति जॉर्ज एच डब्ल्यू बुश ।
- 27 नवंबर 2018 सिंगर मोहम्मद अजीज।
- 9 अक्टूबर 2018 नीतिन बाली।
- 23 सितंबर 2018 प्रोड्यूसर कल्पना लाजमी।
- 17 जुलाई 2018 एक्ट्रेस रीता भादुड़ी।
- 9 जुलाई 2018 एक्टर कवि कुमार आजाद।
- 6 मार्च 2018 (शमी आंटी) एक्ट्रेस नरगिस राबड़ी।
- 12 नवंबर 2018 राजनेता अनंत कुमार।
- 27 अक्टूबर 2018 पूर्व दिल्ली सीएम मदन लाल खुराना।
- 7 अगस्त 2018 पूर्व तमिलनाडु सीएम एम करूणानिधि।

युवा लेखन को प्रोत्साहन देने के लिए पञ्चदूत द्वारा अलग-अलग प्रयास किए जाते रहे हैं। इस बार सोशल मीडिया के विभिन्न माध्यमों पर #kind_panchdoot के साथ एक तस्वीर साझा की गई। जिसे युवाओं ने अपने शब्दों द्वारा सजाया है जिसके अंश यहां मौजूद है...

क्या मां कोई त्यौहार मना रही हो
जो रंग लगाकर दूध पिला रही हो

-brokenwordssatender

v v v

मां की ममता से मौत भी हारी है
वाह रे नर! धिक्कार है तुझपे
आज भी वानर भारी है
घृणित कर्म करके ही तू
ताड़न का अधिकारी है

-trashofwords

v v v

बेजुबां के जिस्म पर कई जख्म पड़ जाते हैं,
क्योंकि इंसानों की गलतियों की सजा मिलती है
बेजुबानों के परिवार वालों को यहां
परिवार तो परिवार होता है
इंसानों का हो या जानवरों का
ये तो अपने-अपने नजरिये का फर्क है।

-nile_s_hmalvi

v v v

मनुष्य ना वानर फिर भी खो दी उसने मानवता
चोट पाई, घाव लहू सने, ना खोई
मां ने ममता

-dil_ke_bol_alfaaz

पत्थर मार जो हाल किया तुमने
गोद में इस नन्ही जान का तो
सोचा होता
पर हैरान नहीं, परेशान भी नहीं
बल्कि खुश हूं कि मैं इंसान नहीं

-kujkhaas

v v v

इंसान-इंसान का ना हुआ
वो क्या मेरा दर्द बांटेगा
मुझे लहू लुहान कर वो हंसता है
वो क्या मेरा दर्द जानेगा
मेरी लाचारी है मैं बेजुबान हूं
मैं यू देख रहा इंसानों को
कोई तो मेरा दर्द भी जानेगा

-om_solanki

v v v

जिंदगी-जिंदगी पे भारी है
मां की ममता का प्यार जारी है
पेट भरती है जो दूसरे समूहों से लड़कर
उस मां की भी जिंदगी खूनों से
लथपथ इस आसमां के नीचे संघर्ष जारी है

-viratthinktank

v v v

खुद खून से लथपथ थी वो पर
मेरी भूख मिटा रही थी
इतनी भोली है मेरी मां
खुद दर्द में हो कर भी
मुझको वो
हंसा रही थी
- अन्शिका

कमजोरों पे अपनी ताकत
आजमाते हैं लोग
जाने कैसी तस्वीर दिखाते
हैं लोग

-bejubaanshayar

कुछ इंसानियत के शब्द को
सार्थक करो क्योंकि उस इंसानियत
के हम भी हकदार हैं,
बस पेट भरने के कुछ जरिये है
वरना हम अपनों से इंसानों से
ज्यादा वफादार हैं,
नाम है जानवर जिसके अर्थ का
अनर्थ हुआ है पर ये जान लो हमें
भी अपने बच्चों से प्यार बेशुमार है

-poojapande4210

मेरे बच्चे को चोट ना लग जाए
साहब, जरा देख के गाड़ी दौड़ाएं
शायद आपके बच्चे भी कभी,
सड़क पर दौड़ते होंगे

-Himadriis

v v v

आज डर का अलग रूप देखा है
मानव को दानव के रूप में देखा है
खून से लथपत दर्द और डर में जो जान देखा है
मैंने आज इंसानियत को शर्मसार होते देखा है।।

-idevelop.around

v v v

गाड़ी चलाओ संभल कर जरा
बच्चा मेरा भी सड़क पार कर रहा
नजरअंदाज आपने ऐसा किया
लहूलुहान उसको पूरा कर दिया

-vineetapindhir

v v v

आज इंसान की इंसानियत मर
चुकी है ये लहू बतला रही है
मौत को भी खड़ा रहना पड़ा,
जब बेजुबान मां बच्चे को दूध पिला रही है।

-dkyadav_ki_lekhani

v v v

माना की मैं एक अदना-सा जानवर
और तू एक बुद्धिमान इंसान
पर जरा-सा भी तेरे हाथ नहीं कांपे क्या
जब किया एक मां को लहूलुहान

-anamika_ghatak

v v v

सुनो उस मां की गुहार
लाड़ला जिसका इकलौता प्यार
अपनी जान की परवाह नहीं
बच्चे को बचाने की शक्ति अपार

- shwetasoni

कहते हैं धरती पर ईश्वर का रूप मां है
हर प्राणी के विषय में यह बात यथार्थ है
दुख भूलकर अपने जो निस्वार्थ संतान को पाले
मां के अतिरिक्त नहीं इस जग में
कोई अन्य इंसा है

-निधि सहगल

v v v

मेरे हौसले पर तू शक न कर
मां बहुत कुछ सह सकती है
मेरी जान कैसे जाएगी भला
वो मेरे लाल तुझमें बसती है

-deepajoshidhawan

v v v

मैं मरते दम तक तुझे दूध
दुहाउंगी, ताकि जिन्दा मेरी अमानत रहे
मैं तो लहुलूहान हूं पर दुआ है
मेरी, तू हर कदम पर सलामत रहे

-अनिल कुशवाह 'अदम्य'

v v v

एक-दूसरे से आगे निकलने की
होड़ में, मानवता भूल जाते हैं लोग
बेजुबानों पर कभी मारते हैं पत्थर
तो कभी सड़कों पर उन्हें रौंद जाते हैं लोग

-Anju_tripathi 'तेजा'

v v v

लहू से सींचा है, मर-मर कर दूध पिलाया है
सीने से लगा कर बच्चे तुझे
दुनिया से बचाया है
जानवर कहकर इंसान ने हमें
जंगल का बताया है
मुझे तो इंसान ही सबसे बड़ा
वहशी नजर आया है।

-mrigasanijeevsharma

v v v

निकलती रही है, वो भरने बच्चे
का पेट यही दिनचर्या विशदरी की हुआ
करती थी वो बसेरा उसी का हुआ करता था,
अब बंगले हैं, व बंगलों के कूड़े से
चुनकर खिलाने में मार भी सहती है।

-preachers_pen

v v v

मां तो मां ही होती है
खुद टूटकर भी अपने बच्चे की
खुशियों का आईना होती है
खुद दर्द में होकर भी उसके बच्चे
के दर्द का मरहम बनी रहती है
वो जुबा से कुछ नहीं कहती पर
उसकी बेजुबान सी आंखे ही उसकी
जुबा से कम नहीं होती
लाख छुपा ले वो अपने दर्द को
फिर भी उसकी आंखें हर दर्द को
बंया कर देती है..वो मां है

-innuminnu

v v v

मैं अपने आंसूओं को रोक रही हूं
कही मेरा बच्चा मुझे रोते हुए ना देख ले
वो भूखा है इसलिए जख्म के दर्द
भूल उसे दूध पिला रही हूं
साथ ही मुझे लहूलुहान कर गया
इंसान की फिक्र कर रही हूं
और वो सही सलामत रहे उसको कुछ ना हो
बार-बार रास्तों की ओर देख
उसकी चिंता कर रही हूं
-rangkarmi_anuj

तुम जबान वालों से मैं बेजुबानों से डरता हूं
उनकी आह से आने वाले तूफानों से डरता हूं
न जाने कितनों को नेस्तनाबूत दुनियां से कर बैठे जंगल के जानवरों से
नहीं मैं शहर के इंसानों से डरता हूं

-gumnam_shayar

गुम है इंसानियत और ऊंचा
अपना ईमान कहते हो?
अरे जानवर तक को नहीं बक्शा
और खुद को इंसान कहते हो?

-namrata

v v v

हैरानी है इन आंखों में
इंसान इतना बेकदर कैसे
सहानुभूति की भाषा तो पशुओं में भी है

-polyphony

v v v

मदारी लिए मुझे जब खेल तमाशा दिखाता है देखते
मुझको बहुत मजा तुम्हें आता है
खुश होते हो तुम देख वो नजारा
फिर ये हालात देखते तुम्हें मेरी
पर तरस क्यों नहीं आता है

-i.am.pragati

v v v

आधुनिकता की दौड़ में शामिल
मानव प्रकृति पर अधिपत्य को तुला है
इस मां की दुखों को अनदेखा कर
फर्राटा भरती कारें से न जाने
किस गुमान में वो चला है

- akashtiwari

v v v

दर्द अपना भुलाये बैठी है मेरी मां
मुझको बाहों में संभाले बैठी है मेरी मां
बेजुबान है कैसे बंया करे
इंसानियत का खौफ
डर आंखों में समाये बैठी है मेरी मां

-aashikh

लहूलुहान है आज ये मां
अपने अंश को बचाते-बचाते
आज एक बार फिर मिसाल बन बैठी है
लोगों की नजरों में
बेजुबान है खामोश है
मगर दिल से बहुत घबराई हुई सी है
अंश को खो देने का डर मन में
बसाई हुई सी है
जरा सी आंच न आए
अक्सर इस चिंतन-मंथन में डूबी रहती है
हर आंच को अपने सिर ये लेकर
बच्चों की रक्षा करती है
क्योंकि मां तो मां ही होती है

-रोली रस्तोगी

वहशत ने भी जहां आकर अपनी
हस्ती भुलाई है
मां के रूप को पाकर हर मां नेक
ही नजर आई है
सुनते आए थे, है सबको हंसी
जन्नत की खवाइशें
जीते जी सबने जन्नत मां तेरे
आंचल में ही पाई है।

-mrigtrisna

v v v

गाड़ी जरा संभाल के चलाइएगा
साहब
आपके घर में तो बहुत से लोग
होंगे राह देखने वाले
मेरे बेटे के लिए सिर्फ में ही हूं

-shishu_tiwari_ww

v v v

अरे! क्या मानव और क्या
मानवता
मंदिर में पत्थर को पूजते हो
मंदिर के लिए बसें फूंकते हो
मुझमें भी है उस हनुमान का
स्वरूप घायल मां के बारें में तनिक न सोचते हो

-arvindkumardubey

v v v

क्या लिखूं इंसानियत खो चुकी है
इंसान की दुनिया अब पैसा हो चुकी है
ये किसी को नहीं छोड़ते
ना जाने क्यों इंसानियत खो चुकी है

-vidhalmeena

v v v

चलो माना बे-ज़ुबान है, पर
बे-जान नहीं है
ठोकर मारने वाला शायद इंसान नहीं है
खून की क्या बिसात, ममता के बहाव में
वाकई मां से बढ़कर कोई भगवान नहीं है

-aashish_nema

v v v

तमाम तकलीफों को सहते हुए भी
मुझे सीने से चिपका कर रखती है
मुझ तक ना पहुंचे कोई भी
मुसीबत ये मेरे तक आने वाले रास्तों पर
भी पैनी नजर रखती है

-KEYURISHARMA

v v v

तन से बहता लहू और सीने से
लगा अंश कैसे इस हालत में छोड़ गया
इनको कोई कंस

-dadhichpraveensharma

v v v

एक मां ही तो है इस दुनिया में
जो आज भी निस्वार्थ भावना से पहले अपने बच्चों को
दुख देखती है वरना आज कल तो हर रिश्ते में
स्वार्थ और मतलब ढूंढे जा रहे हैं।

-surbhi7778

v v v

अपने खून को बचाने की खातिर
अपना खून तक बहा देती है
ऐसी बस मां ही होती है

-jignaa

v v v

लहूलुहान होकर भी अपने बच्चे
को दूध पिलाती है
काम कोई भी जनाब, ये काम
सिर्फ मां कर पाती है

abhish__

v v v

कर रहे तुम बेघर हमे, भूख से
हम हैं आकुल
तेरे रास्ते में आ रहे, देख औलाद
को व्याकुल
वृक्षों को मत काटों, मत छीनो
जीने के अधिकार
लहूलुहान कर, क्या मेरे दर्द से
तुम्हें नहीं सरोकार

-anita_sudhir

v v v

इंसानों में इंसानियत खत्म होती
नजर आ रही है
जानवरों में इंसानियत भरपूर नजर
आ रही है
खुद कष्ट में है जीवन ममता
नजर आ रही है
लगाए अपने कलेजे से दुनिया दिखा रही है

-vivaha

लहूलुहान हालात में बैठा है किसी
आस में
बच्चा है किसी जीव का
वो भी बिलखता देख हालत में
वो भी शिकार इस बेचैनी का
कौन बचाये इस बेरहम जहान में

-hittikahi

v v v

जाति, प्रजाति, मजहब और मुल्क
से परे
एक मां ही है
जो वक्त आने पर दूध और लहू
एक साथ बहाने का जिगर रखती है

-shalonika

v v v

दर्द होता है मुझे भी, मैं कैसे बताऊं
इस क्रूर मानव की मानवता को
सबके सामने कैसे लाऊं
बच्चा मेरा भी है छोटा, बेजुबान है वो भी
उसे इस क्रूर मानव से कैसे बचाऊं

-preetii

v v v

खून बहाया है
खून को बचाने के लिए
ये जो मां का दिल है जनाब
पत्थर से मजबूत, मोम सा नाजुक है

-soniatuli

v v v

वो कारवां हमारा लूट ले गए
जिंदगी दर्द से भर गए
ना बच्चों की चिंता होती
लूट हम भी जाते अपनो के संग

-cru&oflife

v v v

एक लापरवाही खून के रिश्तों में
रेंगटे खड़े कर देती है

-neekawrites

v v v

हरियाली भरे जंगल को बंजर कर दिया
हमारे आशिया को छीन हमें बेघर कर दिया
मां ये कौन लोग है जरा हमें बताओं
जिन्होंने तेरा शरीर खून से भर दिया

-विपिन 'बहार'

v v v

आंखों से आंसू नहीं, अब लहू
बहता है
मरते देखा है इन आंखों ने,
इंसानियत को कई बार

-simplyselva

v v v

दर्द लिए बैठी..लहूलुहान, मैं बेजुबान
भूखी हैं, मेरी संतान
ईंटों के शहर में...पत्थर दिल इंसान

-krishnajha

इंसान, आज फिर तेरी इंसानियत
कही नजर न आई
देख फिर एक बेजुबान मां तेरे
आगे बेबस नजर आई।

-talvindra_writes

v v v

अपना लहू बहाकर देखों कैसे
संतान को बचाती है
वो मां ही है जो दुख सहकर भी
सीने से लगाती है
औलाद पर वारी-वारी कर देती है
अपनी सांसे भी
वो मां ही है जो अपनी औलाद का
जीवन सजाती है

-सचिन गोयल गन्नौर

v v v

साफ बयां करती ये तस्वीर है
इंसान हो जानवर
प्यारा है हर मां को अपना लाल
चाहे खुद क्यों न हो जाए लहूलुहान

-rj_nandy

v v v

अच्छा है, तू इंसान नहीं
पैसे की तुझको पहचान नहीं
अपनों की तुझको फिक्र है पर
खुद पर तुझको अभिमान नहीं

-रवि सारस्वत

v v v

मदमस्त जवानी तेज रफ्तार
ले लेती है कितनों की ये जान
थोड़े से भी चुके हम
और खतरे में है सारा संसार
खुद की मौज में रहकर ही
एक जीव कर लेता जीव का शिकार
घर जाने की जल्दी में रहते
फिर दूजो के घर को देते उजाड़
जैसे हम सबके हैं रिश्ते नाते
ऐसे इनके भी होते हैं परिवार

-dipti_ahir

v v v

देखों जिंदगी ने
किस दौराहे पर ला के पटक दिया
ना आह निकलती है ना जान निकलती है।

-kalpana 'खूबसूरत खयाल'

v v v

खून से लथपथ भले हो काया
बच्चे को प्यार से सहला देगी
हां दर्द होता है, पर मां है न जनाब
कैसे भी बच्चे को बहला देगी

-ramniwas_bhambu

v v v

गुलमोहर के फूल

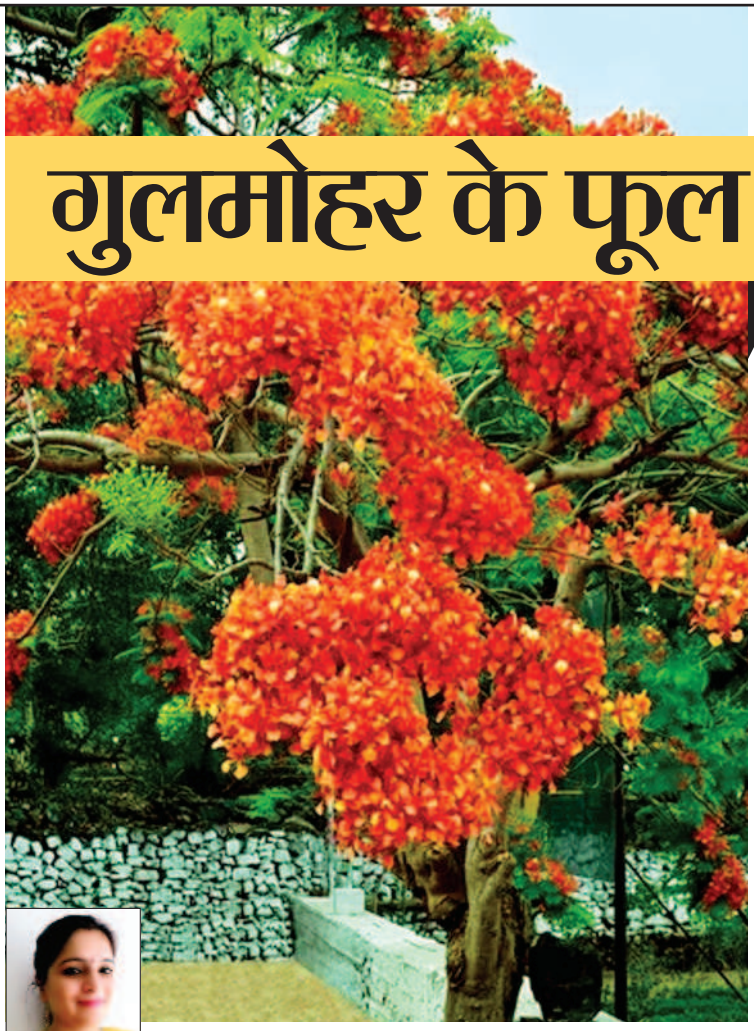

निधि सहगल

आज पाँच साल बाद निकिता ने अपनी स्कूटी उसी पार्क के सामने रोकी, जहाँ वह और अनुज अक्सर मिला करते थे। पार्क की उसी बेंच पर जाकर निकिता बैठी जहाँ वे दोनों दुनिया के शोर और बंदिशों से दूर सिर्फ एक-दूसरे की सुनते थे।

अचानक गुलमोहर का फूल उसके हाथ पर गिरा और उसे देख निकिता यादों के रथ पर सवार अतीत की गलियों में सैर करने लगी।

'अनुज, हमारे रिश्ते को समाज और हमारे घरवाले कभी स्वीकृति नहीं देगें। बेहतर होगा कि अब हम अपनी राहें अलग कर लें।' निकिता को आज भी अपने यह कठोर शब्द याद थे जो उसने अनुज को इसी पार्क में आखरी बार कहे थे। अनुज ने उसे बहुत समझाया था कि वह उसके लिये समाज और अपने घरवालों से लड़ लेगा और उसका हर कदम पर साथ देगा। किन्तु निकिता नहीं मानी थी। आखिर अनुज बोझिल कदमों और टूटे दिल के साथ वहां से चला गया था।

अनुज और निकिता एक ही ऑफिस में सहकर्मी थे। दोनों की दोस्ती कब प्यार में परिवर्तित हो गई, उन्हें स्वयं को पता नहीं चला। किन्तु ये एक ऐसा रिश्ता था जिसे समाज और अनुज के घरवाले कभी मंजूरी नहीं देते।

निकिता एक पैंतीस वर्षीय तलाकशुदा और एक बच्ची की माँ थी और अनुज एक पच्चीस वर्षीय युवा जिसने अभी जीवन की संघर्ष पूर्ण राहों में कदम रखा ही था। निकिता का कोमल और शांत स्वभाव हमेशा से ही अनुज को आकर्षित करता था। और दूसरी तरफ अनुज का चुलबुला और मजाकिया स्वभाव निकिता के सूने जीवन में हंसी की फुहार बन गया था। दोनों ही अपनी जिन्दगी के छोटे-बड़े सुख-दुःख आपस में बांटने लगे थे। अनुज की मां छह साल पहले गुजर गई थी, पिता एक प्राइवेट कम्पनी में कार्यरत थे और छोटा भाई भी दूसरे शहर में नौकरी करता था। घर में एक बुआ थी जो घर संभालती थी। सभी बहुत ही दकियानूसी ख्यालात के थे इसलिये अनुज ने किसी को भी निकिता के बारे में अपने घर में नहीं बताया था। एक दिन अनुज ने निकिता को बताया कि उसकी शादी को लेकर उसके घर में बड़ी जोर-शोर से बातें चल रही है। पर उसने शादी करने से साफ मना कर दिया है। वो सिर्फ निकिता से ही शादी करेगा?

उस दिन निकिता के मन में बहुत से प्रश्न खलबली मचाने लगे। समाज की सोच, उम्र का फासला, उसकी बच्ची की परवरिश, ये सब बातें उसे अन्दर ही अन्दर कचोटने लगी। उसने गहरी सांस ली और मन में एक कठोर निर्णय लिया।

अगले दिन उसने अनुज को मिलने के लिये उसी पार्क में बुलाया। पूरी हिम्मत जुटा कर उसने कठोर शब्दों में अनुज के साथ अपने रिश्ते का अंत कर दिया। अनुज ने उसे बहुत समझाया कि वह सब संभाल लेगा और सबको मना लेगा। किन्तु निकिता ने एक न सुनी। वह अपने निर्णय पर अटल रही।

निकिता ने नौकरी छोड़ दी और किसी दूसरी कम्पनी में नौकरी कर ली। आज जब निकिता ने पांच साल बाद अनुज को उसकी पत्नी व बेटी के साथ बाजार में देखा तो एक पल को निहारती ही रही। किन्तु फिर स्वयं को संभालती हुई सब अनदेखा कर, इस पार्क में चली आई।

एक संतुष्ट मुस्कान के साथ निकिता अब बेंच से उठी और गुलमोहर के कुछ फूल उसने अपने पर्स में रखे। ये फूल उसके लिये अनुज के साथ बिताये पलों का खजाना थे जो उसके जीवन को हर क्षण महकाते रहेगें।

सरकारी नौकरी के लिए आवश्यक
RKCL
RS-CIT एक परिपूर्ण कम्प्यूटर कोर्स
नया पैटर्न RS-CIT क्लास 2018
उज्जवल भविष्य का सार.....
सफलता का प्रवेश द्वार
SOLVER SOLUTION
COMPUTER CENTER
All Accounting Software
TELLY, BUSY, MARG, SOLVER SOLUTION, FATEX
RS-CIT HINDI-ENGLISH TYPING
RS-CIT कम्प्यूटर कोर्स ही क्यों
◆ वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय कोटा द्वारा परीक्षा एवं प्रमाण पत्र।
◆ राज्य सरकार की अनेक सरकारी नौकरीयों में एक आवश्यक पात्रता।
◆ सरकारी कर्मचारियों के फीस का पुनर्भरण प्रोत्साहन राशि के साथ नियमानुसार।
◆ सीखें इन्टरनेट के 150 से अधिक उपयोग।
◆ वेबक्रेम इन्टरनेट व इन्ट्रानेट से सुसज्जित अत्याधुनिक कम्प्यूटर लैब।
VINOD GHORELA 95871-73111
KULDEEP SINGH 97723-12004
HARJINDER SINGH 93524-81061
अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें।
Shree Munda Dham Computers
नजदीक पंचायत समिति हनुमानगढ़ 9587173111
गली नं. 1, नई आबादी ओवर ब्रिज के पास, हनुमानगढ़ टाऊन

'इस प्यार को क्या नाम दूँ'

तेरे इश्क के दरमियान मेरे यारा,
इन जज्बातो को ऐसे पन्हाह मिली
जैसे एक सितारे को चांदनी की रोशनी मिली।।

तुमने दिखाए है, वो खूबसूरत पल
जिन्हें आपके बिना देखना अहसासों के संग
मानो नामुमकिन से है।

मेरे अहसासों को थामा है,
तुमने ऐसे दीपक की रोशनी का गहरा नाता हो
सूरज से जैसे।
हमारा रिश्ता भी है कुछ-कुछ पिछले
जन्म के गहरे नाते सा।

तेरी फिक्र बेहिसाब सी
मेरे दरमियान रग-रग में
ऐसे बह रही, जैसे कोई नदी
सागर से मिलने को तरस रही।।।

मैं तेरे काबिल तो नही लेकिन है कोशिशें
मेरी जरा-जरा तेरी नजरों में तेरा यार बनने की।।

माना खताये बहुत सी है मेरी जो काबिल नहीं माफी के,
अपनी रूह का कतरा-कतरा समझ कर,
तेरा मुझे हर खता पर माफ कर जाना,
यही तेरी फितरत, मुझे लम्हा लम्हा तेरे
और करीब ले जाती है।

तुम मेरे लिए खुदा के फरिश्ते से हो।
समर्पण का एक विशाल शिखर हो,
तुम स्वर्ग का नजारा हो, तुम प्रेम का भंडार हो,
तुम रूह का सुकून हो, तुम मेरे यारा हो,
तुम खुशी के पलों में उभरे आँखों के आंसू से हो।।
तुम मेरे हमदर्द हो।
जहाँ मेरी रूह को जज्बातों के रास्ते पन्हाह मिली।

तुझसे ज्यादा कुछ तो नहीं लेकिन बस
इतनी सी चाहत है मेरे यारा,
वक्त के संग फासलों के दरमियान जज्बातो को
तेरी रूह के रोम रोम में बस जाने को,
ऐसी मेरी छोटी छोटी ख्वाईशें हैं।
यही तेरी-मेरी प्यार की उलझी सी खूबसूरत यादें है।

ऐसा कुछ उलझा है, तेरा-मेरा प्यार का रिश्ता।
अब तुम ही बताओ मेरे यारा,
इस प्यार को क्या नाम दूँ, इस प्यार को क्या नाम दूँ।।

नीलेश मालवीय

मेरी कलम से

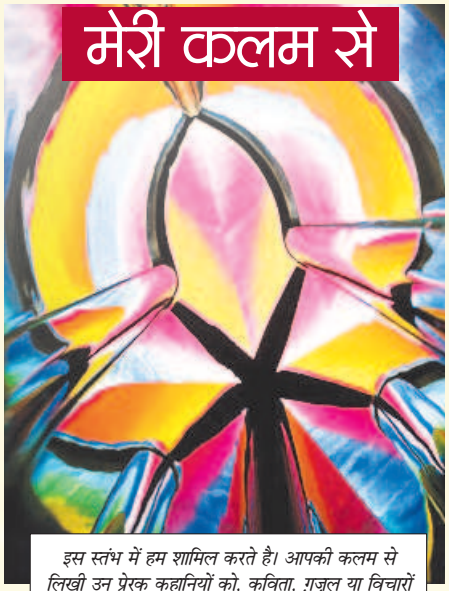

इस स्तंभ में हम शामिल करते है। आपकी कलम से लिखी उन प्रेरक कहानियों को, कविता, ग़ज़ल या विचारों को। यदि आप भी हमें ऐसा ही कुछ अपना लिखा भेजना चाहते हैं तो अपनी फोटो और फोटो आईडी के साथ हमें ई-मेल करें- magazine@panchdoot.com

कविता

रिश्ते

बड़े सुंदर उजियाले थे,
जब गाँव के घरों में छोटे से आले थे।
दिल मे सच्चाई थी,
जब गाँव के चूल्हे पर बनते निवाले थे।।

एक साथ चूल्हे के सामने बैठकर खाना खाते भाई सभी।
एक दूसरे के लिए मन से साफ, कभी ना मन के काले थे।।

लालटेन की रोशनी में रात को पढ़ने का अपना मजा था।
रोशनी मन्द थी,पर अपने से बड़ों का सम्मान बड़ा था।।

शहर आकर उजाले बड़े हो गए।
अपने, अपनों के सामने खड़े हो गए।।

गाँव मे जब रहते थे, तब सब भाई कहलाते थे।
शहर में अपना ही भाई अब रिश्तेदार हो गया।
साथ मे जो खाते थे खाना, वो प्यार ही खो गया।

अब एक घर मे पिता पुत्र भी हफ्तों में मिलते है।
कैसे लगेंगे भाई गले, जब रिश्ते व्हाट्सएप्प पर चलते हैं।।

चलो हम सब मिलकर कुछ प्रयासों को गले लगाते हैं।
रोज ना सही सप्ताह में एक बार साथ खाना खाते हैं।।

नीरज त्यागी

लव अफेयर्स, शादी और तलाक

रिश्तों में कड़वाहट आ गई
नाजायज रिश्ते की नजर लग गई
जो कसमें खाई थी ताउम्र साथ रहने की
आज तलाक लेने की नौबत आ गई
सूली पर चढ़ रहे हैं कितने रिश्ते
प्यार भरे रिश्ते हो गए इतने सस्ते
खेल बना रखा है लोगों ने रिश्तों को
शादी में फेरे लेते हैं सात जन्मों के लिए
सात सालों में अलग कर देते एक दूसरे को
नाजायज रिश्ते बनते फिर तलाक होता
जिस्मानी भूख में इंसान अपनी औलाद खोता
बच्चे दूर होते जा रहे अपने माँ बाप से
कभी बच्चा माँ तो कभी बाप के लिए रोता
तलाक जीते जी मार देता है
लोगों की नजरों में गिरा देता है
पता चल जाए जमाने को ये बात
जमाने के तानो से फिर कोई नहीं बचता है
फिर ऊँगली उठती हैं उस इंसान पे
नाजायज रिश्ता था बातें करते हैं आपस में
इस समाज में नाजायज रिश्ते बनते ही क्यों हैं
क्या आपसी मोहब्बत से लोग ऊब गए हैं
या पश्चिमी सभ्यता की ओर रुख कर रहे हैं
अपनी देश की संस्कृति को मिट्टी में मिला रहे हैं
शादी नाजायज रिश्ते फिर तलाक क्या है सब
सवाल खड़े करता है इंसानों के ऊपर
क्यों नहीं रहता शादीशुदा रिश्ता मजबूत अब
आंकड़े बढ़ते चले जा रहे हैं बहुत ऊपर
सबसे ज्यादा आपराधिक मामला
नाजायज रिश्तों से बढ़ा है
रोज जिरह हो रही हैं, रोज तलाक हो रहे हैं
नाजायज रिश्तों से कितने आत्महत्या कर रहे हैं
इंसान क्यों अपने पाक साफ रिश्तों का कत्ल कर रहे हैं
हर नाजायज रिश्ता रोज कटघरे में खड़ा हो रहा है
मासूम बच्चों का भविष्य अंधकार में जा रहा है।

अनुज शुक्ला

कागजी रिश्ते

जो कहना था खामोशी से,
बिना कहे, कह गए उसके होंठ,
आँखों में आंसू छिपे थे ऐसे,
जैसे पंछी बैठे झुरमुट की ओट,

जल से निर्मल होकर भी,
बन गए बर्फ से कठोर,
समेट न पाये सामान सभी,
चल दिये बस चंद यादें बटोर,

मुड़ जाना उस ओर कभी,
जिधर लगी थी प्यार की चोट,
क्या कहेंगे रिश्ते, लोग सभी,
रहती बस इस बात की कचोट,

वो मीठे शब्द प्यारी बातें,
करती है अब बहुत शोर,
हंसती हैं दिमाग की सौगातें,
और दिल जाता मरोर,

न बाँट सके अपने दर्द हम,
न कह सके प्यार के दो बोल,
खुशियां धीरे-धीरे हो गयी कम,
और चढ़ते रहे हममें बनावटी खोल,

कुछ हलचल हुई मन में ,
मचल गए कागज पर पोर,
क्या ऐसे ही थे हम और,
हमारे रिश्ते के रेशम से डोर।

ओश्मी गुप्ता

अमावस से पूनम तक

ये विरहन है तेरी
या के रात अमावस की
अधूरा हूँ मैं
और अधूरा चाँद भी
ढूढता अपने वजूद को
इस सफर में
तेरी मोहब्बत के
तम से रुखसार हुआ
अमावस से पूनम तक

ये यादें है तेरी
या के सर्द शोख हवा
भीगा हूँ मैं
और गीली आँख भी
कभी बंजर कभी गुलजार
इस सफर में
तेरी मोहब्बत के
महज तेरा इंतजार हुआ
अमावस से पूनम तक

ये मोहब्बत है तेरी
या के इम्तेहान सब्र का
अटका हूँ मैं
और उलझी आस भी
असफार ही असफार
इस सफर में
तेरी मोहब्बत के
इश्तिहार से अखबार हुआ
अमावस से पूनम तक।

पुनीत विद्रोही उर्फ
'सरकश'

जुगलबंदी

सुकूत का फुंसू ऐसा है जिन्दगी में
लफ्ज जुबां तक आकर वापस मुड़ जाते हैं
सन्नाटे का आगोश, हम खामोश
वाह! क्या खूब जुगलबंदी है दर्द और खामोशी में!

नवा फरोज ना बन पाए जिन्दगी में
फितरत ही हमारी बेहोश हो गई
सब फिकर में, हम बेपरवाह
वाह! क्या खूब जुगलबंदी है आवारगी और दीवानगी में!!

मयखाने के हम मेहमान हो गए
परवाने के हम गुलाम हो गए
वाइज नाराज, हम बेराज
वाह! क्या खूब जुगलबंदी है सच्चाई और मदहोशी में

सब्ज पोश लगती है पतझड़ सी
इकबाल करके हम ठुकरा आए
शब में हम मस्ताने, खौफ है आफताब का
गम में है हम! गम में है हम!
वाह! क्या खूब जुगलबंदी है इश्क और बेवकूफी में
सुकूत का फुंसू ऐसा है जिन्दगी में
लफ्ज जुबां तक आकर वापस मुड़ जाते हैं
सन्नाटे का आगोश, हम खामोश
वाह! क्या खूब जुगलबंदी है दर्द और खामोशी में!!

एकता एस. जोशी

दो बातें

बारिश को क्या पता,
उसे बहना कहाँ है।
मुसाफिर को क्या पता,
उसे रहना कहाँ है।

रिश्तों का आलम भी,
कुछ ऐसा ही है जनाब।

जब तक है, जितनी है,
संग उनके खुश रहिये।
प्यारी बातें उनकी सुनिये,
दो बातें आप भी कहिये।

कुनाल चावला

दंबे पांव आ रही है अकेलेपन की बीमारी

लक्षण

- **हर** चीज को लेकर नकारात्मक रवैया।
- **हरदम** उदासी और निराशा की भावना बनी रहना।
- **चिड़चिड़ापन।**
- **हर** चीज में अचानक दिलचस्पी का खत्म हो जाना।
- **लोगों** से घिरे होने पर भी अकेलेपन से ग्रसित रहना।

हम जितना आधुनिक दौर में कदम रख रहे हैं उतना खुद से दूर हो रहे हैं। अवस्थी बताते हैं आज लोगों में एक धारणा बन गई है कि अगर हमनें किसी से अपनी बातों को साझा किया तो इसका असर हमारी छवि पर पड़ेगी। अच्छी-सच्ची छवि को खोने का डर तनाव का हिस्सा है।

मैं उन दिनों को भूल नहीं सकती जब हमें घर से निकले से पहले कहा जाता था गर्दन नीचे करके चलो। हम केवल स्कूल जाने के लिए घर से निकला करते थे और दो-तीन महीने से किसी रिश्तेदार के घर या पार्टी फंक्शन में जाया करते थे। ये बात आपको पढ़ने में काफी आसान लगी होगी लेकिन उस लड़की के लिए नहीं जो इस वक्त 25 साल की है और हर काम को बेहतरीन करने की जिद में एक तरह के डिप्रेशन से ग्रसित है। ऐसा ही एक डिप्रेशन (तनाव, अवसाद) हम सबके अंदर घर कर रहा है। किसी के अंदर जल्दी तो किसी के अंदर दंबे पांवों से। जब तक आप इसे समझेंगे शायद देर नहीं होगी लेकिन आप इससे निकल नहीं पाएंगे। आपको इसके लिए फिर ढ़ेरों दवाइयों का सहारा लेना पड़ेगा जो आपको आगे तनाव की आगे जाने वाली स्टेज्स से बचायेगा। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। यानी वो अकेले जिंदगी बसर नहीं कर सकता। लोगों से घुलना-मिलना, उनके साथ वक्त बिताना, पार्टी करना और मिल-जुलकर जश्न मनाना उसकी जरूरत है। अब वही जरूरत हम कम करते जा रहे हैं, हमारा ज्यादातर समय पैसे कमाने, मेहनत करने और बचा समय फोन में उलछे रहने में निकलता जा रहा है। आज तमाम देशों में अकेलेपन को बीमारी का दर्जा दिया जा रहा है। भारत भी उनमें से एक है, अकेलेपन से निपटने के लिए लोगों को मनोवैज्ञानिक मदद मुहैया कराई जा रही है। यहां आगे भारत की बात करेंगे और आपको जानकार हैरानी होगी कि हमारे देश में 2014 के आंकड़ों के अनुसार 36 प्रतिशत लोग अवसाद यानी डिप्रेशन से ग्रसित हैं और हमारी स्वास्थ्य प्रणाली को मालूम भी नहीं है।

जनवरी, 2015 में अभिनेत्री दीपिका पादुकोण ने अपने डिप्रेशन की कहानी दुनिया के सामने रखी थी। उस दौरान लोगों ने यही सोचा आखिर दीपिका क्यों अवसादग्रस्त है जब उनके पास सबकुछ हैं। दीपिका ने बताया जब साल 2014 में अपने बेहतरीन करियर में थी तब अचानक एक सुबह उन्हें समझ नहीं आया उनके साथ क्या हुआ और वह बेहोश हो गई। दीपिका ने बताया यह तनाव इतना गहरा था कि उन्हें मनोचिकित्सक की मदद लेनी पड़ी। आपके पास हर चीज है लेकिन अवसाद का सरोकार किसी चीज के होने या न होने से नहीं है। ऐसा ही बॉलीवुड के किंग खान शाहरूख खान के साथ हुआ। बॉलीवुड और आम जीवन में कई ऐसे लोग हैं जो अपने डिप्रेशन से लड़ नहीं पाते और आत्महत्या कर लेते हैं। आप कहेंगे कि आत्महत्या एक अलग चीज हैं लेकिन नहीं एक हेल्थ रिपोर्ट में ये दावा किया है कि आत्महत्याओं के 75 प्रतिशत मामले डिप्रेशन में आकर लिए गए हैं।

क्या तनाव वंशानुगत होता है

मनोवैज्ञानिकों से बात कर मालूम चला कि उन्हें अभी तक ये नहीं मालूम की लोगों में इतनी जल्दी हताशा आती क्यों है। उन्होंने कहा मनुष्य का ब्रेन दो तरह से काम करता है। जब उसमें कुछ नेगटिव बदलाव होने लगते हैं तब मनुष्य में हताशा अकेले रहने की आदत पड़ने लगती है। जब हमने उनसे पूछा की जिस तरह मनुष्य के शरीर में कई बदलाव वंशानुगत होते हैं तो क्या तनाव में भी ऐसा हो सकता तो उन्होंने बताया कि विज्ञान में इस बात को नकारा नहीं जा सकता। हालांकि अभी तक हम ऐसे जींस की तलाश नहीं कर पाए हैं, जो अवसाद से गहरे जुड़े हो। वहीं मनोवैज्ञानिक प्रोफेसर सुरेश अवस्थी का कहना है कि लोगों का संयुक्त परिवार से एकाकी परिवारों में तब्दील होना इसका सबसे बड़ा कारण है। दूसरा कारण युवा प्रेम। बदलते परिवेश में आज कच्ची उम्र में प्रेम होना, धोखा मिलना, शारीरिक संबंध बनाना जैसे कारण अवसाद के महत्वपूर्ण कारण हैं।

हम जितना आधुनिक दौर में कदम रख रहे हैं उतना खुद से दूर हो रहे हैं। अवस्थी बताते हैं आज लोगों में एक धारणा बन गई है कि अगर हमनें किसी से अपनी बातों को साझा किया तो इसका असर उनकी छवि पर पड़ेगा। अच्छी-सच्ची छवि को खोने का डर तनाव का हिस्सा है। आजकल लोग प्रतिक्रिया नहीं देते बल्कि उसको अंदर ही अंदर दबाए चले जाते हैं और एक दिन वह आपका रिश्ता अपनों से खराब कर बैठती हैं। फिर दोस्ती हो, परिवार हो, प्रेम हो या अन्य।

भारत की स्थिति

भागदौड़ के इस समय में धीरे-धीरे संबंधों की डोर कमजोर पड़ती जा रही है। हम 'व्यस्तता' का जीवन जीते हुए अधिक काम करते हैं, कम सोते हैं और टेक्नोलॉजी में ही फसते जा रहे हैं। हम इतने अकेले हो चले हैं कि हमें वास्तविक प्यार तक की पहचान खोते जा रहे हैं, जिस कारण भारत में तलाक और अफेयर्स के मामले भी बढ़ते जा रहे हैं। भारत में सबसे ज्यादा तलाक के मामले मुम्बई और केरल के

हैं। अब बात करें स्वास्थ्य विभाग की तो हालात ये हैं कि भारत में पर्याप्त संख्या में डॉक्टर नहीं हैं। 3.1 लाख की जनसंख्या पर एक मनोचिकित्सक उपलब्ध है। इनमें से भी 80 प्रतिशत महानगरों और बड़े शहरों में केंद्रित हैं। अत: यह माना जाना चाहिए दस लाख ग्रामीण लोगों पर एक मनोचिकित्सक है 2011 की जनगणना के आंकड़ों को देखें तो भारत में 16.92 करोड़ लोग मानसिक, स्नायु विकारों और गंभीर नशे की गिरफ्त में हैं, मानसिक रोगों से केवल 22 लाख लोग प्रभावित हैं। 99 प्रतिशत मानसिक रोगी उपचार जरूरी नहीं मानते हैं।

साल 2014 में पहली बार देश में मानसिक स्वास्थ्य नीति का शुभारंभ हुआ। जिसके बाद मानसिक रोगों से जुड़ी बदनामी और आत्महत्या को रोकने के लिए नीति तैयार हुई। मानसिक स्वास्थ्य देखभाल विधेयक पारित तो हुआ लेकिन वर्तमान स्थिति और रोगियों को देखते हुए लगता है सारा काम कागजों तक ही सिमटकर रह गया। इतनी गंभीर स्थिति के बाद, खास बात यह है कि पूरी दुनिया में भारत ही ऐसा देश है, जहां स्वास्थ्य पर जीडीपी का सबसे कम प्रतिशत खर्च होता है। दिसंबर, 2014 में स्वास्थ्य बजट में 20 फीसदी कटौती के बाद कैसे हालात होंगे, इसकी कल्पना न करें तो बेहतर होगा।

क्यों हैं हम तनाव में

भारत में स्वास्थ्य शिक्षा पर सरकारें न के बराबर ध्यान देती हैं, इसलिए मानसिक स्वास्थ्य पर भी समाज में शिक्षा का काम नहीं हुआ। इसी कारण यह माना जाने लगा कि मानसिक रोग से प्रभावित हर व्यक्ति को अस्पताल में भर्ती कराने की जरूरत होती है, जबकि यह सही नहीं है। अध्ययन बताते हैं कि इस दौरान लोगों को संयम, प्रेम, परिवार का साथ, उचित देखभाल, महौल में परिवर्तन, ज्यादा से ज्यादा बातचीत आदि से किसी व्यक्ति का तनाव खत्म किया जा सकता है। तनाव के पीछे सामाजिक कार्यकर्ता श्रेष्ठता कुंजन बताती हैं कि माहौल और व्यवहार का हमारे व्यक्तित्व पर गहरा असर पड़ता। कुछ लोग इसे अपने ऊपर हावी नहीं होने देते और कुछ लोग इसे हावी होने के बावजूद इसका प्रभाव अपने अंदर दबा लेते हैं और यही से शुरू होता है भावनाओं के साथ खिलवाड़ करने का खेल जो व्यक्ति को कब भीतर ही भीतर अकेला बना देता है, उसके अपनों को नहीं पता चलता। द लांसेट शोध पत्रिका के अध्ययन से मालूम चला कि भारत में साल 1990 में विभिन्न मानसिक रोगों से प्रभावित और गंभीर नशे से प्रभावित लोगों की संख्या 10.88 करोड़ थी। जो वर्ष 2013 में बढ़कर 16.92 करोड़ हो गई। भारत में डिमेंशिया के प्रभावित लोगों की संख्या में 92 प्रतिशत, डिसथीमिया से प्रभावित लोगों की संख्या में 67 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। गंभीर अवसाद से प्रभावित भी 59 प्रतिशत बढ़े हैं। भारत में आज की स्थिति में लगभग 4.9 करोड़ लोग गंभीर किस्म के अवसाद के शिकार हैं। इसी तरह लगभग 3.7 करोड़ लोग उन्माद (एंग्जायटी) की गिरफ्त में हैं।

श्रेष्ठता ने आगे बताया कि भारत में कई चीजें बड़ी जटिल हैं जैसे कि किसी परिवार में मानसिक रोगी है तो उसे अपमानजनक या नाकारात्मक ढ़ग से देखना। समस्या की जड़ का पता लगाए बिना डॉक्टरों से दवाईयां दिलाना लोगों से उनकी बातें करने में कतराना। हमारे देश में इसी विचारों की जटिलता के कारण ऐसे लोग समाज में ही छिपे रहते हैं। उन्हें सही समय पर मानसिक स्वास्थ्य सेवाएं न मिलने के कारण यह समस्या इतनी गहराती जा रही है।

भारत में मानसिक रूप से अस्वस्थ

	मानसिक रूप से विक्षप्त	मानसिक रोगी	कुल
भारत	1505965	722880	2228845
राजस्थान	81389	41047	122436
उत्तरप्रदेश	181342	76603	257945
बिहार	89251	37521	126772
पश्चिम बंगाल	136523	71515	208038
मध्यप्रदेश	77803	39513	117316
कर्नाटक	93974	20913	114887
आंध्रप्रदेश	132380	43169	175549
गुजरात	66393	42037	108430

स्रोत - जनगणना 2011

अकेलेपन में खुश हैं लोग

मेट्रो शहरों में किए गए सर्वे में पाया गया है कि लोग अकेले रहने में खुद को ज्यादा खुश समझते हैं। उनका मानना है कि अकेले रहने पर वो अपने काम पर ज्यादा ध्यान दे पाते हैं। अपनी बेहतरी पर फोकस कर पाते हैं। नतीजा उनकी क्रिएटिविटी बढ़ जाती है। इसलिए उन्हें अकेला रहना पंसद है और वह इस स्टेज को डिप्रेशन नहीं मानते। जब इस बारें मनोवैज्ञानिक से पूछा गया तो उन्होंने कहा, मानव के स्वभाव को समझना बहुत मुश्किल है केवल उसकी हरकतों से अंदाजा लगाया जा सकता है। कुछ लोग मानसिक रूप से इतने मजबूत होते हैं जिनपर तनाव का कोई असर नहीं पड़ता इसलिए कह सकते हैं अकेले रहने वाले लोग खुद को दूसरों के मुकाबले ज्यादा खुश मानते हैं।

एक अध्ययन के मुताबिक, व्यक्ति तीन वजहों से लोगों से घुलने-मिलने से बचते हैं। कुछ लोग शर्मीले होते हैं। इसलिए दूसरों से मिलने-जुलने से बचते हैं। वहीं कुछ लोगों को पार्टियों में जाना पसंद नहीं होता। कुछ ऐसे लोग भी होते हैं, जो मिलनसार होने के बावजूद अकेले वक्त बिताना पसंद करते हैं। वैसे अकेलपन को लेकर लोगों की राय ठीक भी हैं क्योंकि हमारा इतिहास गवाह है कि साधु-संत आत्मचिंतन करने के लिए कई-कई वर्षों तक तप, ध्यान किया करते थे। लेकिन इन आकंड़ो को झूठलाया नहीं जा सकता कि दुनिया भर के देशों में मनोविकार तेजी से फैलता जा रहा है। जैसे-जैसे शहरों का विस्तार हो रहा है, रोगों में वृद्धि भी उतनी तेजी से हो रही है। शहरों में बढ़ते अकेलेपन का नतीजा है कि आज मानसिक समस्याएं इतनी तेजी से पनप रही हैं। अगर नहीं संभलें तो भविष्य में अवसाद एक महामारी का रूप अवश्य लेगी।

SAGE PRODUCTIONS

Sage Sweater Collection Drive 2018

DEC 2018 - JAN 2019

एक कंबल दे सकता है, ठंड में गर्मी का एहसास
रु. 100 डोनेट कर के बढ़ाएं हाथ

/sagesweatercollectiondrive

Contact Us: +91-9650665141 / +91-9999898727

BHIM paytm G Pay

+91-9650665141